قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

الٓمٓ

पारा - 1

eParah

منزل 1

1 سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ 5

اٰيَاتُهَا: 7 | رُكُوْعُهَا: 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ۙ①
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का

الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيْمِ ۙ②	مٰلِكِ	يَوْمِ
बहुत महरबान है	निहायत रहम करने वाला है	मालिक है	दिन का

الدِّيْنِ ؕ③	اِيَّاكَ	نَعْبُدُ	وَ
बदले के	सिर्फ़ तेरी ही	हम इबादत करते हैं	और

اِيَّاكَ	نَسْتَعِيْنُ ؕ④	اِهْدِنَا
सिर्फ़ तेरी ही	हम मदद चाहते हैं	हिदायत दे हमें

الصِّرَاطَ	الْمُسْتَقِيْمَ ۙ⑤	صِرَاطَ
रास्ते	सीधे की	रास्ता

الَّذِيْنَ	اَنْعَمْتَ	عَلَيْهِمْ ۙ⑥
उनका	इनआम किया तूने	जिन पर

غَيْرِ	الْمَغْضُوْبِ	عَلَيْهِمْ
ना	उनका जो ग़ज़ब किया गया	जिन पर

وَ	لَا	الضَّآلِّيْنَ ع⑦
और	ना	उनका जो गुमराह हैं

ع 1 7 00

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

2 سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ 87

اٰيَاتُهَا : 286 رُكُوْعَاتُهَا : 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

معانقة 1

الٓمّٓ ①	ذٰلِكَ	الْكِتٰبُ	لَا	رَيْبَ ۛۚ	فِيْهِ ۛۚ	هُدًى	لِّلْمُتَّقِيْنَ ② لا
الٓمّٓ	ये	किताब	नहीं	कोई शक	इसमें	हिदायत है	मुत्तक़ी लोगों के लिए

الَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِالْغَيْبِ	وَ يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَ مِمَّا
वो जो	ईमान लाते हैं	ग़ैब पर	और वो क़ायम करते हैं	नमाज़	और उससे जो

رَزَقْنٰهُمْ	يُنْفِقُوْنَ ③ لا	وَالَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِمَآ	اُنْزِلَ
रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	वो ख़र्च करते हैं	और वो जो	ईमान लाते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْكَ	وَمَآ	اُنْزِلَ	مِنْ قَبْلِكَ ج	وَبِالْاٰخِرَةِ	هُمْ
तरफ़ आपके	और जो	नाज़िल किया गया	आप से पहले	और आख़िरत पर	वो

يُوْقِنُوْنَ ④ ط	اُولٰٓئِكَ	عَلٰى هُدًى	مِّنْ رَّبِّهِمْ ق	وَ اُولٰٓئِكَ
वो यक़ीन रखते हैं	यही लोग हैं	हिदायत पर	अपने रब की तरफ़ से	और यही लोग हैं

هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ ⑤	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	سَوَآءٌ	عَلَيْهِمْ
वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	यकसां/बराबर है	उन पर

ءَاَنْذَرْتَهُمْ	اَمْ	لَمْ	تُنْذِرْهُمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑥	خَتَمَ
ख़्वाह डराएं आप उन्हें	या	ना	आप डराएं उन्हें	नहीं वो ईमान लाएंगे	मोहर लगा दी

اللّٰهُ	عَلٰى	قُلُوْبِهِمْ	وَعَلٰى	سَمْعِهِمْ ط	وَعَلٰٓى	اَبْصَارِهِمْ
अल्लाह ने	ऊपर	उनके दिलों के	और ऊपर	उनके कानों के	और ऊपर	उनकी आंखों के

غِشَاوَةٌ ز	وَّلَهُمْ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ⑦ ع	وَمِنَ النَّاسِ	مَنْ
पर्दा है	और उनके लिए	अज़ाब है	बहुत बड़ा	और बाज़ लोग हैं	जो

ع 1 7 1

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

يَّقُوْلُ	اٰمَنَّا	بِاللّٰهِ	وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَمَا	هُمْ	بِمُؤْمِنِيْنَ ⑧
कहते हैं	ईमान लाए हम	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और नहीं	वो	ईमान लाने वाले

يُخٰدِعُوْنَ	اللّٰهَ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ۚ	وَمَا	يَخْدَعُوْنَ	اِلَّآ
वो धोखा देते हैं	अल्लाह को	और उनको जो	ईमान लाए	और नहीं	वो धोखा देते	मगर

اَنْفُسَهُمْ	وَمَا	يَشْعُرُوْنَ ⑨ ط	فِيْ قُلُوْبِهِمْ	مَّرَضٌ ۙ	فَزَادَهُمُ
अपने नफ़्सों को	और नहीं	वो शऊर रखते	उनके दिलों में	मर्ज़ है	तो ज़्यादा कर दिया उन्हें

اللّٰهُ	مَرَضًا ۚ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ۢ	بِمَا	كَانُوْا
अल्लाह ने	मर्ज़ में	और उनके लिए	अज़ाब है	अलमनाक/दर्दनाक	बवजह उसके जो	थे वो

يَكْذِبُوْنَ ⑩	وَاِذَا	قِيْلَ	لَهُمْ	لَا تُفْسِدُوْا	فِي الْاَرْضِ ۙ
वो झूठ बोलते	और जब	कहा जाता है	उन्हें	ना तुम फ़साद करो	ज़मीन में

قَالُوْٓا	اِنَّمَا	نَحْنُ	مُصْلِحُوْنَ ⑪	اَلَآ	اِنَّهُمْ	هُمُ
वो कहते हैं	बेशक	हम तो	इस्लाह करने वाले हैं	ख़बरदार	बेशक वो	वो ही

الْمُفْسِدُوْنَ	وَلٰكِنْ	لَّا يَشْعُرُوْنَ ⑫	وَاِذَا	قِيْلَ	لَهُمْ
फ़साद करने वाले हैं	और लेकिन	नहीं वो शऊर रखते	और जब	कहा जाता है	उन्हें

اٰمِنُوْا	كَمَآ	اٰمَنَ	النَّاسُ	قَالُوْٓا	اَنُؤْمِنُ	كَمَآ
ईमान ले आओ	जैसा कि	ईमान लाए	लोग	वो कहते हैं	क्या हम ईमान लाऐं	जैसा कि

اٰمَنَ	السُّفَهَآءُ ط	اَلَآ	اِنَّهُمْ	هُمُ	السُّفَهَآءُ	وَلٰكِنْ
ईमान लाए	बेवक़ूफ़	ख़बरदार	बेशक वो	वो ही	बेवक़ूफ़ हैं	और लेकिन

لَّا يَعْلَمُوْنَ ⑬	وَاِذَا	لَقُوا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	قَالُوْٓا
नहीं वो इल्म रखते	और जब	वो मुलाक़ात करते हैं	उनसे जो	ईमान लाए	वो कहते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰمَنَّا ۚ	وَ اِذَا	خَلَوْا	اِلٰى	شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ	قَالُوْٓا	اِنَّا
ईमान लाए हम	और जब	वो अकेले होते हैं	तरफ़	अपने शैतानों के	वो कहते हैं	बेशक हम

مَعَكُمْ ۙ	اِنَّمَا	نَحْنُ	مُسْتَهْزِءُوْنَ ⑭	اَللّٰهُ	يَسْتَهْزِئُ
तुम्हारे साथ हैं	बेशक	हम तो	मज़ाक़ उड़ाने वाले हैं	अल्लाह	मज़ाक़ उड़ाता है

بِهِمْ	وَ يَمُدُّهُمْ	فِيْ طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ ⑮	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
उनका	और वह ढील दे रहा है उन्हें	उनकी सरकशी में	वो भटकते फिरते हैं	यही लोग हैं	जिन्होंने

اشْتَرَوُا	الضَّلٰلَةَ	بِالْهُدٰى ۪	فَمَا	رَبِحَتْ	تِّجَارَتُهُمْ	وَ مَا	كَانُوْا
ख़रीद ली	गुमराही	बदले हिदायत के	तो ना	फ़ायदेमंद हुई	तिजारत उनकी	और ना	थे वो

مُهْتَدِيْنَ ⑯	مَثَلُهُمْ	كَمَثَلِ	الَّذِى	اسْتَوْقَدَ	نَارًا ۚ
हिदायत पाने वाले	मिसाल उनकी	जैसे मिसाल	उसकी जिसने	जलाई	आग

فَلَمَّآ	اَضَآءَتْ	مَا حَوْلَهٗ	ذَهَبَ	اللّٰهُ	بِنُوْرِهِمْ	وَ تَرَكَهُمْ
फिर जब	उसने रोशन कर दिया	माहौल उसका	ले गया	अल्लाह	नूर उनका	और उसने छोड़ दिया उन्हें

فِيْ ظُلُمٰتٍ	لَّا يُبْصِرُوْنَ ⑰	صُمٌّۢ	بُكْمٌ	عُمْىٌ	فَهُمْ
अंधेरों में	नहीं वो देख पाते	बहरे हैं	गूंगे हैं	अंधे हैं	पस वो

لَا يَرْجِعُوْنَ ⑱ ۙ	اَوْ	كَصَيِّبٍ	مِّنَ السَّمَآءِ	فِيْهِ	ظُلُمٰتٌ
नहीं वो लौटते	या	जैसे ज़ोरदार बारिश	आसमान से	उसमें	अंधेरे

وَّ رَعْدٌ	وَّ بَرْقٌ ۚ	يَجْعَلُوْنَ	اَصَابِعَهُمْ	فِيْٓ اٰذَانِهِمْ
और गरज	और बिजली है	वो डाल लेते हैं	उंगलियां अपनी	अपने कानों में

مِّنَ الصَّوَاعِقِ	حَذَرَ	الْمَوْتِ ؕ	وَاللّٰهُ	مُحِيْطٌۢ	بِالْكٰفِرِيْنَ ⑲
बिजली के कड़ाकों से	बचने के लिए	मौत से	और अल्लाह	घेरने वाला है	काफ़िरों को

لَهُمْ	اَضَآءَ	كُلَّمَآ	اَبْصَارَهُمْ ؕ	يَخْطَفُ	الْبَرْقُ	يَكَادُ
उनके लिए	वो रोशनी करती है	जब कभी	निगाहें उनकी	कि वो उचक ले	बिजली की चमक	क़रीब है

شَآءَ	وَلَوْ	قَامُوْا ؕ	عَلَيْهِمْ	اَظْلَمَ	وَاِذَآ	فِيْهِ ۙۗ	مَّشَوْا
चाहे	और अगर	वो खड़े हो जाते है	उन पर	वह अंधेरा कर देती है	और जब	उस में	वो चल पड़ते हैं

كُلِّ	عَلٰى	اللّٰهَ	اِنَّ	وَاَبْصَارِهِمْ ؕ	بِسَمْعِهِمْ	لَذَهَبَ	اللّٰهُ
हर	ऊपर	अल्लाह	बेशक	और आंखें उनकी	कान उनके	अलबत्ता वो ले जाए	अल्लाह

الَّذِىْ	رَبَّكُمُ	اعْبُدُوْا	النَّاسُ	يٰۤاَيُّهَا	قَدِيْرٌ ۝20 ع	شَىْءٍ
जिसने	अपने रब की	इबादत करो	लोगो	ऐ	बहुत क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के

ع 2 13 2

جَعَلَ	الَّذِىْ	تَتَّقُوْنَ ۝21 ۙ	لَعَلَّكُمْ	مِنْ قَبْلِكُمْ	وَالَّذِيْنَ	خَلَقَكُمْ
बनाया	वो जिसने	तुम बच जाओ	ताकि तुम	तुमसे पहले थे	और उन्हें जो	पैदा किया तुम्हें

مِنَ السَّمَآءِ	وَّاَنْزَلَ	بِنَآءً ۪	وَّالسَّمَآءَ	فِرَاشًا	الْاَرْضَ	لَكُمُ
आसमान से	और उसने उतारा	छत	और आसमान को	फ़र्श	ज़मीन को	तुम्हारे लिए

تَجْعَلُوْا	فَلَا	لَّكُمْ ۚ	رِزْقًا	مِنَ الثَّمَرٰتِ	بِهٖ	فَاَخْرَجَ	مَآءً
तुम बनाओ	पस ना	तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फलों से	साथ उसके	फिर उसने निकाला	पानी

فِىْ رَيْبٍ	كُنْتُمْ	وَاِنْ	تَعْلَمُوْنَ ۝22	وَّاَنْتُمْ	اَنْدَادًا	لِلّٰهِ
किसी शक में	हो तुम	और अगर	तुम जानते हो	हालांकि तुम	शरीक	अल्लाह के लिए

وَادْعُوْا	مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪	بِسُوْرَةٍ	فَاْتُوْا	عَلٰى عَبْدِنَا	نَزَّلْنَا	مِّمَّا
और बुला लो	इस जैसी	कोई सूरत	पस ले आओ	अपने बंदे पर	नाज़िल किया हमने	उससे जो

فَاِنْ	صٰدِقِيْنَ ۝23	كُنْتُمْ	اِنْ	اللّٰهِ	مِّنْ دُوْنِ	شُهَدَآءَكُمْ
फिर अगर	सच्चे	हो तुम	अगर	अल्लाह के	सिवाए	अपने गवाहों को

لَّمْ	تَفْعَلُوْا	وَ لَنْ	تَفْعَلُوْا	فَاتَّقُوا	النَّارَ	الَّتِیْ	وَقُوْدُهَا
ना	तुमने किया	और हरगिज़ नहीं	तुम कर सकोगे	पस डरो	उस आग से	वो जो	ईंधन हैं उसका

النَّاسُ	وَالْحِجَارَةُ ۖ	اُعِدَّتْ	لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿24﴾	وَ بَشِّرِ	الَّذِيْنَ
इंसान	और पत्थर	तैयार की गई है	काफ़िरों के लिए	और ख़ुशख़बरी दे दीजिए	उन्हें जो

اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	اَنَّ	لَهُمْ	جَنّٰتٍ	تَجْرِیْ
ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	बेशक	उनके लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं

مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ؕ	كُلَّمَا	رُزِقُوْا	مِنْهَا	مِنْ ثَمَرَةٍ
उनके नीचे से	नहरें	जब कभी	वो दिए जाऐंगे	उनसे	कोई फल

رِّزْقًا ۙ	قَالُوْا	هٰذَا	الَّذِیْ	رُزِقْنَا	مِنْ قَبْلُ ۙ	وَ اُتُوْا
बतौर रिज़्क़	वो कहेंगे	ये	वो ही है जो	दिए गए हम	इससे पहले	और वो दिए जाऐंगे

بِهٖ	مُتَشَابِهًا ؕ	وَ لَهُمْ	فِيْهَآ	اَزْوَاجٌ	مُّطَهَّرَةٌ ۙ	وَّهُمْ
उससे	मिलता-जुलता	और उनके लिए	उनमें	बीवियां होंगी	निहायत पाकीज़ा	और वो

فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿25﴾	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَسْتَحْيٖٓ	اَنْ	يَّضْرِبَ	مَثَلًا
उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	बेशक	अल्लाह	नहीं हया फ़रमाता/शर्माता	कि	वो बयान करे	कोई मिसाल

مَّا	بَعُوْضَةً	فَمَا	فَوْقَهَا ؕ	فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	فَيَعْلَمُوْنَ
ख़्वाह	मादा मच्छर की हो	या जो	ऊपर है उसके	तो रहे	वो जो	ईमान लाए	पस वो इल्म रखते हैं

اَنَّهُ	الْحَقُّ	مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ	وَ اَمَّا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فَيَقُوْلُوْنَ
कि बेशक वो	हक़ है	उनके रब की तरफ़ से	और रहे	वो जिन्होंने	कुफ्र किया	तो वो कहते हैं

مَاذَآ	اَرَادَ	اللّٰهُ	بِهٰذَا	مَثَلًا ۘ	يُضِلُّ	بِهٖ	كَثِيْرًا ۙ
क्या	इरादा किया	अल्लाह ने	साथ इस	मिसाल के	वो गुमराह करता है	साथ इसके	कसीर (तादाद) को

وقف لازم

وَّيَهْدِىْ	بِهٖ	كَثِيْرًا ؕ	وَمَا	يُضِلُّ	بِهٖٓ	اِلَّا
और वो हिदायत देता है	साथ उसके	कसीर (तादाद) को	और नहीं	वो गुमराह करता	साथ उसके	मगर

الْفٰسِقِيْنَ ﴿26﴾	الَّذِيْنَ	يَنْقُضُوْنَ	عَهْدَ	اللّٰهِ	مِنْۢ بَعْدِ	مِيْثَاقِهٖ ۪
फ़ासिक़ों को	वो जो	तोड़ते हैं	अहद (वादा)	अल्लाह का	बाद	उसके मज़बूत करने के

وَيَقْطَعُوْنَ	مَآ	اَمَرَ	اللّٰهُ	بِهٖٓ	اَنْ	يُّوْصَلَ	وَيُفْسِدُوْنَ
और वो काटते हैं	जो	हुक्म दिया	अल्लाह ने	उसका	कि	वो जोड़ा जाए	और वो फ़साद करते हैं

فِى الْاَرْضِ ؕ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿27﴾	كَيْفَ	تَكْفُرُوْنَ
ज़मीन में	यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	किस तरह	तुम इंकार करते हो

بِاللّٰهِ	وَكُنْتُمْ	اَمْوَاتًا	فَاَحْيَاكُمْ ۚ	ثُمَّ	يُمِيْتُكُمْ	ثُمَّ
अल्लाह का	थे तुम	मुर्दे	फिर उसने ज़िंदा किया तुम्हें	फिर	वो मौत देगा तुम्हें	फिर

يُحْيِيْكُمْ	ثُمَّ	اِلَيْهِ	تُرْجَعُوْنَ ﴿28﴾	هُوَ	الَّذِىْ	خَلَقَ	لَكُمْ
वो ज़िंदा करेगा तुम्हें	फिर	उसी की तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	वो ही है	जिसने	पैदा किया	तुम्हारे लिए

مَّا	فِى الْاَرْضِ	جَمِيْعًا ۗ	ثُمَّ	اسْتَوٰٓى	اِلَى	السَّمَآءِ	فَسَوّٰىهُنَّ
जो	ज़मीन में है	सब का सब	फिर	वो मुतावज्जह हुआ	तरफ़	आसमान के	पस उसने दुरुस्त करके बना दिया उन्हें

سَبْعَ	سَمٰوٰتٍ ؕ	وَهُوَ	بِكُلِّ	شَىْءٍ	عَلِيْمٌ ﴿29﴾ ع	وَاِذْ
सात	आसमान	और वो	हर	चीज़ का	ख़ूब इल्म रखने वाला है	और जब

ع 3 9 3

قَالَ	رَبُّكَ	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اِنِّىْ	جَاعِلٌ	فِى الْاَرْضِ	خَلِيْفَةً ؕ
फ़रमाया	आपके रब ने	फ़रिश्तों से	बेशक मैं	बनाने वाला हुं	ज़मीन में	एक ख़लीफ़ा

قَالُوْٓا	اَتَجْعَلُ	فِيْهَا	مَنْ	يُّفْسِدُ	فِيْهَا	وَيَسْفِكُ	الدِّمَآءَ ۚ
उन्होंने कहा	क्या तू बनाएगा	इसमें	उसको जो	फ़साद करेगा	इसमें	और वो बहाएगा	ख़ून

وَنَحْنُ	نُسَبِّحُ	بِحَمْدِكَ	وَنُقَدِّسُ	لَكَ ؕ	قَالَ	اِنِّيْٓ
और हम	हम तस्बीह करते हैं	साथ तेरी तारीफ़ के	और हम पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी	फ़रमाया	बेशक मैं

اَعْلَمُ	مَا	لَا	تَعْلَمُوْنَ ﴿30﴾	وَعَلَّمَ	اٰدَمَ	الْاَسْمَآءَ	كُلَّهَا
मैं जानता हूं	जो	नहीं	तुम जानते	और उसने सिखा दिए	आदम को	नाम	सब उनके

ثُمَّ	عَرَضَهُمْ	عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ	فَقَالَ	اَنْۢبِـُٔوْنِيْ	بِاَسْمَآءِ	هٰٓؤُلَآءِ
फिर	उसने पेश किया उन्हें	फ़रिश्तों पर	फिर फ़रमाया	ख़बर दो मुझे	नामों की	उन सबके

اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿31﴾	قَالُوْا	سُبْحٰنَكَ	لَا	عِلْمَ	لَنَآ
अगर	हो तुम	सच्चे	उन्होंने कहा	पाक है तू	नहीं	कोई इल्म	हमारे लिए

اِلَّا	مَا	عَلَّمْتَنَا ؕ	اِنَّكَ	اَنْتَ	الْعَلِيْمُ	الْحَكِيْمُ ﴿32﴾	قَالَ
मगर	जो	सिखाया तूने हमें	बेशक तू	तू ही है	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	फ़रमाया

يٰٓاٰدَمُ	اَنْۢبِئْهُمْ	بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ	فَلَمَّآ	اَنْۢبَاَهُمْ	بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ
ऐ आदम	ख़बर दो इन्हें	उनके नामों की	फिर जब	उसने ख़बर दी उन्हें	उनके नामों की

قَالَ	اَلَمْ	اَقُلْ	لَّكُمْ	اِنِّيْٓ	اَعْلَمُ	غَيْبَ	السَّمٰوٰتِ
फ़रमाया	क्या नहीं	मैंने कहा था	तुम से	बेशक मैं	मैं जानता हूं	ग़ैब	आसमानों

وَالْاَرْضِ ۙ	وَاَعْلَمُ	مَا	تُبْدُوْنَ	وَمَا	كُنْتُمْ	تَكْتُمُوْنَ ﴿33﴾
और ज़मीन का	और मैं जानता हूं	जो कुछ	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो कुछ	हो तुम	तुम छुपाते

وَاِذْ	قُلْنَا	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اسْجُدُوْا	لِاٰدَمَ	فَسَجَدُوْٓا	اِلَّآ	اِبْلِيْسَ ؕ
और जब	कहा हमने	फ़रिश्तों से	सज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने सज्दा किया	सिवाय	इब्लीस के

اَبٰى	وَاسْتَكْبَرَ ۫	وَكَانَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿34﴾	وَقُلْنَا	يٰٓاٰدَمُ
उसने इंकार किया	और तकब्बुर किया	और वह हो गया	काफ़िरों में से	और कहा हमने	ऐ आदम

اسْكُنْ	اَنْتَ	وَ زَوْجُكَ	الْجَنَّةَ	وَ كُلَا	مِنْهَا	رَغَدًا
रहो	तुम	और बीवी तुम्हारी	जन्नत में	और तुम दोनों खाओ	इसमें	फ़राग़त से

حَيْثُ	شِئْتُمَا ۪	وَلَا	تَقْرَبَا	هٰذِهِ	الشَّجَرَةَ	فَتَكُوْنَا
जहां से	तुम दोनों चाहो	और ना	तुम दोनों क़रीब जाना	उस	दरख़्त	वरना तुम दोनों हो जाओगे

مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿35﴾	فَاَزَلَّهُمَا	الشَّيْطٰنُ	عَنْهَا	فَاَخْرَجَهُمَا
ज़ालिमों में से	फिर फुसला दिया उन दोनों को	शैतान ने	उससे	फिर उसने निकलवा दिया उन दोनों को

مِمَّا	كَانَا	فِيْهِ ۪	وَ قُلْنَا	اهْبِطُوْا	بَعْضُكُمْ	لِبَعْضٍ	عَدُوٌّ ۚ
उससे जो	वो दोनों थे	जिसमें	और कहा हमने	उतर जाओ	बाज़ तुम्हारे	बाज़ के	दुश्मन हैं

وَ لَكُمْ	فِى الْاَرْضِ	مُسْتَقَرٌّ	وَّ مَتَاعٌ	اِلٰى حِيْنٍ ﴿36﴾	فَتَلَقّٰٓى
और तुम्हारे लिए	ज़मीन में	जाए क़रार है	और फ़ायदा उठाना है	एक वक़्त तक	पस सीख लिए

اٰدَمُ	مِنْ رَّبِّهٖ	كَلِمٰتٍ	فَتَابَ	عَلَيْهِ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	التَّوَّابُ
आदम ने	अपने रब से	चंद कलिमात	फिर वो महरबान हुआ	उस पर	बेशक वो	वो ही है	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿37﴾	قُلْنَا	اهْبِطُوْا	مِنْهَا	جَمِيْعًا ۚ	فَاِمَّا
निहायत रहम करने वाला	कहा हमने	उतर जाओ	इससे	सब के सब	फिर अगर

يَاْتِيَنَّكُمْ	مِّنِّىْ	هُدًى	فَمَنْ	تَبِعَ	هُدَايَ	فَلَا
आए तुम्हारे पास	मेरी तरफ़ से	कोई हिदायत	तो जिसने	पैरवी की	मेरी हिदायत की	तो ना

خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿38﴾	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	और वो जिन्होंने	कुफ्र किया

وَ كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَآ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا
और झुठलाया	हमारी आयात को	यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें

ع 4 10 4

خٰلِدُوْنَ ﴿39﴾ ع	يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	اذْكُرُوْا	نِعْمَتِيَ	الَّتِيْٓ	اَنْعَمْتُ
हमेशा रहने वाले हैं	ऐ बनी इस्राईल	याद करो	मेरी नेमत को	वो जो	इनआम की मैंने
عَلَيْكُمْ	وَ اَوْفُوْا	بِعَهْدِيْٓ	اُوْفِ	بِعَهْدِكُمْ ۚ	وَ اِيَّايَ
तुम पर	और पूरा करो	मेरे अहद को	मैं पूरा करूंगा	तुम्हारे अहद को	और सिर्फ़ मुझ ही से
فَارْهَبُوْنِ ﴿40﴾	وَ اٰمِنُوْا	بِمَآ	اَنْزَلْتُ	مُصَدِّقًا	لِّمَا	مَعَكُمْ
पस डरो मुझसे	और ईमान लाओ	उस पर जो	नाज़िल किया मैंने	तस्दीक़ करने वाला	उसके लिए जो	तुम्हारे पास है
وَ لَا	تَكُوْنُوْٓا	اَوَّلَ	كَافِرٍ	بِهٖ ۪	وَ لَا	تَشْتَرُوْا	بِاٰيٰتِيْ
और ना	तुम हो जाओ	सबसे पहला (गिरोह)	इंकार करने वाला	इसका	और ना	तुम लो	मेरी आयात के बदले
ثَمَنًا	قَلِيْلًا ۫	وَ اِيَّايَ	فَاتَّقُوْنِ ﴿41﴾	وَ لَا	تَلْبِسُوا	الْحَقَّ
क़ीमत	थोड़ी	और सिर्फ़ मुझ ही से	पस डरो मुझसे	और ना	तुम मिलाओ	हक़ को
بِالْبَاطِلِ	وَ تَكْتُمُوا	الْحَقَّ	وَ اَنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿42﴾	وَ اَقِيْمُوا
साथ बातिल के	और (ना) तुम छुपाओ	हक़ को	हालांकि तुम	तुम इल्म रखते हो	और क़ायम करो
الصَّلٰوةَ	وَ اٰتُوا	الزَّكٰوةَ	وَ ارْكَعُوْا	مَعَ	الرّٰكِعِيْنَ ﴿43﴾	اَتَاْمُرُوْنَ
नमाज़	और अदा करो	ज़कात	और रुकूअ करो	साथ	रुकूअ करने वालों के	क्या तुम हुक्म देते हो
النَّاسَ	بِالْبِرِّ	وَ تَنْسَوْنَ	اَنْفُسَكُمْ	وَ اَنْتُمْ	تَتْلُوْنَ
लोगों को	नेकी का	और तुम भूल जाते हो	अपने नफ़्सों को	हालांकि तुम	तुम तिलावत करते हो
الْكِتٰبَ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿44﴾	وَ اسْتَعِيْنُوْا	بِالصَّبْرِ	وَ الصَّلٰوةِ ؕ	وَ اِنَّهَا
किताब की	क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	और मदद तलब करो	साथ सब्र	और नमाज़ के	और बेशक वो
لَكَبِيْرَةٌ	اِلَّا	عَلَى	الْخٰشِعِيْنَ ﴿45﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يَظُنُّوْنَ	اَنَّهُمْ
अलबत्ता बड़ी (भारी) है	मगर	ऊपर	ख़ुशूअ करने वालों के	वो जो	यक़ीन रखते हैं	बेशक वो

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 7 5

مُّلٰقُوْا	رَبِّهِمْ	وَ اَنَّهُمْ	اِلَيْهِ	رٰجِعُوْنَ ﴿46﴾ ع	يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
मुलाक़ात करने वाले हैं	अपने रब से	और बेशक वो	तरफ़ उसी के	लौटने वाले हैं	ऐ बनी इस्राईल

اذْكُرُوْا	نِعْمَتِيَ	الَّتِيْٓ	اَنْعَمْتُ	عَلَيْكُمْ	وَ اَنِّيْ	فَضَّلْتُكُمْ
याद करो	मेरी नेअमत	वो जो	इनआम की मैंने	तुम पर	और बेशक मैं	फ़ज़ीलत दी मैंने तुम्हें

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿47﴾	وَ اتَّقُوْا	يَوْمًا	لَّا تَجْزِيْ	نَفْسٌ	عَنْ نَّفْسٍ
तमाम जहानों पर	और डरो	उस दिन से	ना काम आएगा	कोई नफ़्स	किसी नफ़्स के

شَيْـًٔا	وَّ لَا	يُقْبَلُ	مِنْهَا	شَفَاعَةٌ	وَّ لَا	يُؤْخَذُ	مِنْهَا
कुछ भी	और ना	क़ुबूल की जाऐगी	उससे	कोई सिफ़ारिश	और ना	लिया जाऐगा	उससे

عَدْلٌ	وَّ لَا	هُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿48﴾	وَ اِذْ	نَجَّيْنٰكُمْ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
कोई बदला	और ना	वो	वो मदद किए जाऐंगे	और जब	निजात दी हमने तुम्हें	आले फ़िरऔन से

يَسُوْمُوْنَكُمْ	سُوْٓءَ	الْعَذَابِ	يُذَبِّحُوْنَ	اَبْنَآءَكُمْ	وَ يَسْتَحْيُوْنَ
वो तकलीफ़ देते थे तुम्हें	बुरे	अज़ाब की	वो ख़ूब ज़िबाह करते थे	तुम्हारे बेटों को	और वो ज़िंदा छोड़ देते थे

نِسَآءَكُمْ ؕ	وَ فِيْ ذٰلِكُمْ	بَلَآءٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	عَظِيْمٌ ﴿49﴾	
तुम्हारी औरतों को	और इसमें	आज़माइश थी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	बहुत बड़ी	

وَ اِذْ	فَرَقْنَا	بِكُمُ	الْبَحْرَ	فَاَنْجَيْنٰكُمْ	وَ اَغْرَقْنَآ
और जब	फाड़ा हमने	तुम्हारे लिए	समुन्दर को	फिर निजात दी हमने तुम्हें	और ग़र्क़ कर दिया हमने

اٰلَ فِرْعَوْنَ	وَ اَنْتُمْ	تَنْظُرُوْنَ ﴿50﴾	وَ اِذْ	وٰعَدْنَا	مُوْسٰٓى
आले फ़िरऔन को	और तुम	तुम देख रहे थे	और जब	वादा किया हमने	मूसा से

اَرْبَعِيْنَ	لَيْلَةً	ثُمَّ	اتَّخَذْتُمُ	الْعِجْلَ	مِنْۢ بَعْدِهٖ	وَ اَنْتُمْ
चालीस	रातों का	फिर	बना लिया तुमने	बछड़े को (माबूद)	बाद उसके	और तुम

لَعَلَّكُمْ	ذٰلِكَ	مِّنْۢ بَعْدِ	عَنْكُمْ	عَفَوْنَا	ثُمَّ	ظٰلِمُوْنَ ﴿51﴾
ताकि तुम	उसके	बाद	तुमसे	दरगुज़र किया हमने	फिर	ज़ालिम थे

لَعَلَّكُمْ	وَالْفُرْقَانَ	الْكِتٰبَ	مُوْسَى	اٰتَيْنَا	وَاِذْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿52﴾
ताकि तुम	और फ़ुरक़ान	किताब	मूसा को	दी हमने	और जब	तुम शुक्र अदा करो

اِنَّكُمْ	يٰقَوْمِ	لِقَوْمِهٖ	مُوْسٰى	قَالَ	وَاِذْ	تَهْتَدُوْنَ ﴿53﴾
बेशक तुम	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	मूसा ने	कहा	और जब	तुम हिदायत पा जाओ

بَارِئِكُمْ	اِلٰى	فَتُوْبُوْٓا	الْعِجْلَ	بِاتِّخَاذِكُمُ	اَنْفُسَكُمْ	ظَلَمْتُمْ
अपने पैदा करने वाले के	तरफ़	पस तौबा करो	बछड़े को (माबूद)	बवजह बनाने के तुम्हारे	अपने नफ़्सों पर	ज़ुल्म किया तुमने

بَارِئِكُمْ ؕ	عِنْدَ	لَّكُمْ	خَيْرٌ	ذٰلِكُمْ	اَنْفُسَكُمْ ؕ	فَاقْتُلُوْٓا
तुम्हारे पैदा करने वाले के	नज़दीक	तुम्हारे लिए	बेहतर है	ये	अपने नफ़्सों को	तो क़त्ल करो

وَاِذْ	الرَّحِيْمُ ﴿54﴾	التَّوَّابُ	هُوَ	اِنَّهٗ	عَلَيْكُمْ ؕ	فَتَابَ
और जब	निहायत रहम करने वाला	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	वो ही है	बेशक वो	तुम पर	फिर वो महरबान हुआ

اللّٰهَ	نَرَى	حَتّٰى	لَكَ	نُّؤْمِنَ	لَنْ	يٰمُوْسٰى	قُلْتُمْ
अल्लाह को	हम देख लें	यहां तक कि	तुझ पर	हम ईमान लाऐंगे	हरगिज़ नहीं	ऐ मूसा	कहा तुमने

بَعَثْنٰكُمْ	ثُمَّ	تَنْظُرُوْنَ ﴿55﴾	وَاَنْتُمْ	الصّٰعِقَةُ	فَاَخَذَتْكُمُ	جَهْرَةً
उठाया हमने तुम्हें	फिर	तुम देख रहे थे	और तुम	बिजली की कड़क ने	फिर पकड़ लिया तुम्हें	रु ब रू/सामने

عَلَيْكُمْ	وَظَلَّلْنَا	تَشْكُرُوْنَ ﴿56﴾	لَعَلَّكُمْ	مَوْتِكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ
तुम पर	और साया किया हमने	तुम शुक्र अदा करो	ताकि तुम	तुम्हारी मौत के	बाद

مِنْ طَيِّبٰتِ	كُلُوْا	وَالسَّلْوٰى ؕ	الْمَنَّ	عَلَيْكُمُ	وَاَنْزَلْنَا	الْغَمَامَ
इन पाकीज़ा चीज़ों से	खाओ	और सलवा	मन्न	तुम पर	और उतारा हमने	बादलों का

مَا	رَزَقْنٰكُمْ ط	وَمَا	ظَلَمُوْنَا	وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
जो	रिज़्क़ दिया हमने तुम्हें	और नहीं	उन्होंने ज़ुल्म किया हम पर	और लेकिन	थे वो	अपने नफ़्सों ही पर

يَظْلِمُوْنَ ﴿57﴾	وَاِذْ	قُلْنَا	ادْخُلُوْا	هٰذِهِ	الْقَرْيَةَ	فَكُلُوْا	مِنْهَا
वो ज़ुल्म करते	और जब	कहा हमने	दाख़िल हो जाओ	इस	बस्ती में	फिर खाओ	उसमें से

حَيْثُ	شِئْتُمْ	رَغَدًا	وَّادْخُلُوا	الْبَابَ	سُجَّدًا	وَّقُوْلُوْا
जहां से	चाहो तुम	फ़राग़त से	और दाख़िल हो जाओ	दरवाज़े से	सज्दा करते हुए	और कहो

حِطَّةٌ	نَّغْفِرْ	لَكُمْ	خَطٰيٰكُمْ ط	وَسَنَزِيْدُ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿58﴾
हित्तातुन (बख़्श दे)	हम बख़्श देंगे	तुम्हारे लिए	ख़ताऐं तुम्हारी	और अनक़रीब हम ज़्यादा देंगे	ऐहसान करने वालों को

فَبَدَّلَ	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	قَوْلًا	غَيْرَ	الَّذِيْ	قِيْلَ	لَهُمْ
तो बदल डाला	जिन्होंने	ज़ुल्म किया था	बात को	सिवाए	उसके जो	कही गई थी	उनसे

فَاَنْزَلْنَا	عَلَى الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	رِجْزًا	مِّنَ السَّمَآءِ	بِمَا	كَانُوْا
तो उतारा हमने	उन पर जिन्होंने	ज़ुल्म किया था	अज़ाब	आसमान से	बवजह उसके जो	थे वो

يَفْسُقُوْنَ ﴿59﴾ ع	وَاِذِ	اسْتَسْقٰى	مُوْسٰى	لِقَوْمِهٖ	فَقُلْنَا	اضْرِبْ
वह नाफ़रमानी करते	और जब	पानी मांगा	मूसा ने	अपनी क़ौम के लिए	तो कहा हमने	मारो

ع 6 13 6

بِّعَصَاكَ	الْحَجَرَ ط	فَانْفَجَرَتْ	مِنْهُ	اثْنَتَا عَشْرَةَ	عَيْنًا ط
अपने असा को	इस पत्थर पर	तो फूट पड़े	उससे	बारह	चश्मे

قَدْ	عَلِمَ	كُلُّ	اُنَاسٍ	مَّشْرَبَهُمْ ط	كُلُوْا	وَاشْرَبُوْا	مِنْ رِّزْقِ
तहक़ीक़	जान लिया	सब	लोगों ने	घाट अपना	खाओ	और पियो	रिज़्क़ से

اللّٰهِ	وَلَا	تَعْثَوْا	فِي الْاَرْضِ	مُفْسِدِيْنَ ﴿60﴾	وَاِذْ	قُلْتُمْ	يٰمُوْسٰى
अल्लाह के	और ना	तुम फ़साद करो	ज़मीन में	मुफ़सिद बन कर	और जब	कहा तुमने	ऐ मूसा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَنْ	نَّصْبِرَ	عَلٰى طَعَامٍ	وَّاحِدٍ	فَادْعُ	لَنَا	رَبَّكَ	يُخْرِجْ
हरगिज़ नहीं	हम सब्र करेंगे	खाने पर	एक ही	पस दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो निकाले

لَنَا	مِمَّا	تُنْۢبِتُ	الْاَرْضُ	مِنْۢ بَقْلِهَا	وَقِثَّآئِهَا	وَفُوْمِهَا
हमारे लिए	उसमें से जो	उगाती है	ज़मीन	सब्ज़ी अपनी	और ककड़ी अपनी	और गंदुम अपनी

وَعَدَسِهَا	وَبَصَلِهَا	قَالَ	اَتَسْتَبْدِلُوْنَ	الَّذِىْ	هُوَ	اَدْنٰى
और मसूर अपने	और प्याज़ अपने	कहा	क्या तुम बदलना चाहते हो	उसे जो	वो	कमतर है

بِالَّذِىْ	هُوَ	خَيْرٌ	اِهْبِطُوْا	مِصْرًا	فَاِنَّ	لَكُمْ	مَّا
बदले उसके जो	वो	बेहतर है	उतर जाओ	शहर में	तो बेशक	तुम्हारे लिए है	जो

سَاَلْتُمْ ؕ	وَضُرِبَتْ	عَلَيْهِمُ	الذِّلَّةُ	وَالْمَسْكَنَةُ ۗ	وَبَآءُوْ
मांगा तुमने	और मार दी गई	उन पर	ज़िल्लत	और मोहताजी	और वो पलटे

بِاٰيٰتِ	يَكْفُرُوْنَ	كَانُوْا	بِاَنَّهُمْ	ذٰلِكَ	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	بِغَضَبٍ
साथ आयात के	वह कुफ्र करते	थे वो	बवजह उसके कि वो	ये	अल्लाह की तरफ़ से	साथ ग़ज़ब के

بِمَا	ذٰلِكَ	الْحَقِّ ؕ	بِغَيْرِ	النَّبِيّٖنَ	وَيَقْتُلُوْنَ	اللّٰهِ
बवजह उसके जो	ये	हक़ के	बग़ैर	नबियों को	और वो क़त्ल करते थे	अल्लाह की

ع 7 2 7

عَصَوْا	وَّكَانُوْا	يَعْتَدُوْنَ ﴿61﴾ ع	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ
उन्होंने नाफ़रमानी की	और थे वो	वो हद से निकल जाते	बेशक	वो लोग जो	ईमान लाऐ	और वो लोग जो

هَادُوْا	وَالنَّصٰرٰى	وَالصّٰبِـِٕيْنَ	مَنْ	اٰمَنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
यहूदी बन गए	और नस्रानी	और साबी	जो कोई	ईमान लाया	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर

وَعَمِلَ	صَالِحًا	فَلَهُمْ	اَجْرُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ ۚ	وَلَا	خَوْفٌ
और उसने अमल किया	नेक	तो उनके लिए	अज्र है उनका	पास	उनके रब के	और ना	कोई ख़ौफ़ होगा

عَلَيۡهِمۡ	وَلَا	هُمۡ	يَحۡزَنُوۡنَ ﴿62﴾	وَاِذۡ	اَخَذۡنَا	مِيۡثَاقَكُمۡ	وَرَفَعۡنَا
उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	और जब	लिया हमने	पुख़्ता अहद तुमसे	और उठाया हमने

فَوۡقَكُمُ	الطُّوۡرَ ؕ	خُذُوۡا	مَاۤ	اٰتَيۡنٰكُمۡ	بِقُوَّةٍ	وَّاذۡكُرُوۡا	مَا
ऊपर तुम्हारे	तूर को	पकड़ो	जो	दिया हमने तुम्हें	साथ क़ुव्वत के	और याद करो	जो

فِيۡهِ	لَعَلَّكُمۡ	تَتَّقُوۡنَ ﴿63﴾	ثُمَّ	تَوَلَّيۡتُمۡ	مِّنۡۢ بَعۡدِ	ذٰلِكَ ۚ
इसमें है	ताकि तुम	तुम बच जाओ	फिर	फिर गए तुम	बाद	उसके

فَلَوۡلَا	فَضۡلُ	اللّٰهِ	عَلَيۡكُمۡ	وَرَحۡمَتُهٗ	لَكُنۡتُمۡ	مِّنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿64﴾
पस अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	तुम पर	और रहमत उसकी	अलबत्ता होते तुम	ख़सारा पाने वालों में से

وَلَقَدۡ	عَلِمۡتُمُ	الَّذِيۡنَ	اعۡتَدَوۡا	مِنۡكُمۡ	فِى السَّبۡتِ
और अलबत्ता तहक़ीक	जान लिया तुमने	उनको जो	हद से निकल गए	तुम में से	सब्त (हफ़्ते के दिन) में

فَقُلۡنَا	لَهُمۡ	كُوۡنُوۡا	قِرَدَةً	خٰسِـئِيۡنَ ﴿65﴾ ۚ	فَجَعَلۡنٰهَا	نَكَالًا
तो कहा हमने	उनसे	हो जाओ	बंदर	ज़लील व ख़्वार	तो बना दिया हमने इस(वाक़ये) को	इबरत

لِّمَا	بَيۡنَ يَدَيۡهَا	وَمَا	خَلۡفَهَا	وَمَوۡعِظَةً	لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿66﴾
उनके लिए जो	सामने थे उनके	और जो	पीछे (बाद) होंगे उनके	और नसीहत	मुत्तक़ी लोगों के लिए

وَاِذۡ	قَالَ	مُوۡسٰى	لِقَوۡمِهٖۤ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَاۡمُرُكُمۡ	اَنۡ	تَذۡبَحُوۡا
और जब	कहा	मूसा ने	अपनी क़ौम से	बेशक	अल्लाह	हुक्म देता है तुम्हें	कि	तुम ज़बह करो

بَقَرَةً	قَالُوۡۤا	اَتَتَّخِذُنَا	هُزُوًا	قَالَ	اَعُوۡذُ	بِاللّٰهِ	اَنۡ
एक गाय	उन्होंने कहा	क्या तुम बनाते हो हमें	मज़ाक़	उसने कहा	मैं पनाह लेता हूं	अल्लाह की	कि

اَكُوۡنَ	مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿67﴾	قَالُوا	ادۡعُ	لَنَا	رَبَّكَ	يُبَيِّنۡ
मैं हो जाऊं	जाहिलों में से	उन्होंने कहा	दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो वाज़ेह कर दे

لَّنَا	مَا	هِيَ ؕ	قَالَ	اِنَّهٗ	يَقُوْلُ	اِنَّهَا	بَقَرَةٌ	لَّا فَارِضٌ
हमारे लिए	कैसी हो	वो	कहा	बेशक वो	वो फ़रमाता है	बेशक वो	गाय	ना बूढ़ी हो

وَّلَا	بِكْرٌ ؕ	عَوَانٌۢ	بَيْنَ	ذٰلِكَ ؕ	فَافْعَلُوْا	مَا	تُؤْمَرُوْنَ ﴿68﴾
और ना	छोटी	औसत उम्र की हो	दर्मियान	उसके	तो करो	जो	तुम हुक्म दिए जाते हो

قَالُوا	ادْعُ	لَنَا	رَبَّكَ	يُبَيِّنْ	لَّنَا	مَا	لَوْنُهَا ؕ	قَالَ
उन्होंने कहा	दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो वाज़ेह कर दे	हमारे लिए	कैसा हो	रंग उसका	कहा

اِنَّهٗ	يَقُوْلُ	اِنَّهَا	بَقَرَةٌ	صَفْرَآءُ	فَاقِعٌ	لَّوْنُهَا
बेशक वो	वो फ़रमाता है	बेशक वो	गाय हो	ज़र्द रंग की	ख़ूब गहरा हो	रंग उसका

تَسُرُّ	النّٰظِرِيْنَ ﴿69﴾	قَالُوا	ادْعُ	لَنَا	رَبَّكَ	يُبَيِّنْ	لَّنَا
ख़ुश करती हो	देखने वालों को	उन्होंने कहा	दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो वाज़ेह कर दे	हमारे लिए

مَا	هِيَ ۙ	اِنَّ	الْبَقَرَ	تَشٰبَهَ	عَلَيْنَا ؕ	وَاِنَّآ	اِنْ شَآءَ
कैसी हो	वो	बेशक	गाय	मुश्तबा हो गई है	हम पर	और बेशक हम	चाहा	अगर

اللّٰهُ	لَمُهْتَدُوْنَ ﴿70﴾	قَالَ	اِنَّهٗ	يَقُوْلُ	اِنَّهَا	بَقَرَةٌ	لَّا
अल्लाह ने	अलबत्ता राह पा लेने वाले हैं	कहा	बेशक वो	वो फ़रमाता है	बेशक वो	ऐसी गाय हो	ना

ذَلُوْلٌ	تُثِيْرُ	الْاَرْضَ	وَلَا	تَسْقِى	الْحَرْثَ ۚ	مُسَلَّمَةٌ	لَّا
जुती हुई हो	कि वो हल चलाती हो	ज़मीन में	और ना	वो सैराब करती हो	खेती को	सही सलामत हो	ना हो

شِيَةَ	فِيْهَا ؕ	قَالُوا	الْـٰٔنَ	جِئْتَ	بِالْحَقِّ ؕ	فَذَبَحُوْهَا
कोई दाग़	उसमें	उन्होंने कहा	अब	लाया है तू	हक़ को	फ़िर उन्होंने ज़बह किया उसे

وَمَا	كَادُوْا	يَفْعَلُوْنَ ﴿71﴾ ع	وَاِذْ	قَتَلْتُمْ	نَفْسًا	فَادّٰرَءْتُمْ
और ना	वो क़रीब थे कि	वो करते	और जब	क़त्ल किया तुमने	एक नफ़्स को	फिर एक-दूसरे पर डालने लगे तुम

ع 8 10 8

© ISLAMIC INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيهَا ط	وَاللّٰهُ	مُخْرِجٌ	مَّا	كُنْتُمْ	تَكْتُمُونَ ج (72)	فَقُلْنَا
उस (के बारे) में	और अल्लाह	निकालने वाला था	जो	थे तुम	तुम छुपाते	पस कहा हमने

اضْرِبُوهُ	بِبَعْضِهَا	كَذٰلِكَ	يُحْيِ	اللّٰهُ	الْمَوْتٰى	وَيُرِيكُمْ
मारो उसे	साथ इसके बाज़ हिस्से के	इसी तरह	ज़िंदा करेगा है	अल्लाह	मुर्दों को	और वो दिखाता है तुम्हें

اٰيٰتِهٖ	لَعَلَّكُمْ	تَعْقِلُونَ (73)	ثُمَّ	قَسَتْ	قُلُوبُكُمْ	مِّنْ بَعْدِ
अपनी निशानियां	ताकि तुम	तुम अक़्ल से काम लो	फिर	सख़्त हो गए	दिल तुम्हारे	बाद

ذٰلِكَ	فَهِيَ	كَالْحِجَارَةِ	اَوْ	اَشَدُّ	قَسْوَةً	اِنَّ
उसके	तो वो	पत्थरों की तरह हैं	या	ज़्यादा शदीद	सख़्ती में	और बेशक

مِنَ الْحِجَارَةِ	لَمَا	يَتَفَجَّرُ	مِنْهُ	الْاَنْهٰرُ ط	وَاِنَّ	مِنْهَا
बाज़ पत्थर	अलबत्ता वो हैं जो	फूट पड़ती हैं	उनसे	नहरें	और बेशक	कुछ उनमें से

لَمَا	يَشَّقَّقُ	فَيَخْرُجُ	مِنْهُ	الْمَآءُ	وَاِنَّ	مِنْهَا	لَمَا
अलबत्ता वो हैं जो	फट जाते है	फिर निकल आता है	उनसे	पानी	और बेशक	कुछ उनमें से	अलबत्ता वो हैं जो

يَهْبِطُ	مِنْ خَشْيَةِ	اللّٰهِ ط	وَمَا	اللّٰهُ	بِغَافِلٍ	عَمَّا	تَعْمَلُونَ (74)
गिर पड़ते हैं	ख़ौफ़ से	अल्लाह के	और नहीं	अल्लाह	ग़ाफ़िल	उससे जो	तुम अमल करते हो

اَفَتَطْمَعُونَ	اَنْ	يُّؤْمِنُوا	لَكُمْ	وَقَدْ	كَانَ	فَرِيقٌ	مِّنْهُمْ
क्या फिर तुम तमा रखते हो	कि	वो ईमान लाऐंगे	तुम्हारे लिए	हालांकि तहक़ीक़	है	एक गिरोह (के लोग)	उनमें

يَسْمَعُونَ	كَلٰمَ	اللّٰهِ	ثُمَّ	يُحَرِّفُونَهٗ	مِنْ بَعْدِ	مَا	عَقَلُوهُ
वो सुनते हैं	कलाम	अल्लाह का	फिर	वो तहरीफ़ कर डालते हैं उसमें	बाद इसके	जो	उन्होंने समझ लिया उसे

وَهُمْ	يَعْلَمُونَ (75)	وَاِذَا	لَقُوا	الَّذِينَ	اٰمَنُوا	قَالُوٓا	اٰمَنَّا ج ط
जबकि वो	वो इल्म रखते हैं	और जब	वो मुलाक़ात करते हैं	उनसे जो	ईमान लाए	वो कहते हैं	ईमान लाए हम

وَاِذَا	خَلَا	بَعْضُهُمْ	اِلٰى بَعْضٍ	قَالُوْٓا	اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ
और जब	अलेहदा होते हैं	बाज़ उनके	तरफ़ बाज़ के	वो कहते हैं	क्या तुम बातें बताते हो उन्हें

بِمَا	فَتَحَ	اللّٰهُ	عَلَيْكُمْ	لِيُحَآجُّوْكُمْ	بِهٖ	عِنْدَ	رَبِّكُمْ ؕ
जो	खोल दी हैं	अल्लाह ने	तुम पर	ताकि वो झगड़ा करें तुमसे	साथ उसके	पास	तुम्हारे रब के

اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿76﴾	اَوَلَا	يَعْلَمُوْنَ	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا
क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	क्या भला नहीं	वो इल्म रखते	बेशक	अल्लाह	जानता है	जो

يُسِرُّوْنَ	وَمَا	يُعْلِنُوْنَ ﴿77﴾	وَمِنْهُمْ	اُمِّيُّوْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ
वो छुपाते हैं	और जो	वो ज़ाहिर करते हैं	और उनमें से कुछ	अनपढ़ हैं	नहीं वो इल्म रखते

الْكِتٰبَ	اِلَّآ	اَمَانِيَّ	وَاِنْ	هُمْ	اِلَّا	يَظُنُّوْنَ ﴿78﴾	فَوَيْلٌ
किताब का	सिवाय	तमन्नाओं के	और नहीं	वो	मगर	वो गुमान करते	पस हलाकत है

لِّلَّذِيْنَ	يَكْتُبُوْنَ	الْكِتٰبَ	بِاَيْدِيْهِمْ ۗ	ثُمَّ	يَقُوْلُوْنَ
उनके लिए जो	वो लिखते हैं	किताब को	अपने हाथों से	फिर	वो कहते हैं

هٰذَا	مِنْ عِنْدِ	اللّٰهِ	لِيَشْتَرُوْا	بِهٖ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ
ये	पास से है	अल्लाह के	ताकि वो ले लें	बदले उसके	क़ीमत	थोड़ी

فَوَيْلٌ	لَّهُمْ	مِّمَّا	كَتَبَتْ	اَيْدِيْهِمْ	وَوَيْلٌ
पस हलाकत है	उनके लिए	बवजह उसके जो	लिखा	उनके हाथों ने	और हलाकत है

لَّهُمْ	مِّمَّا	يَكْسِبُوْنَ ﴿79﴾	وَقَالُوْا	لَنْ	تَمَسَّنَا	النَّارُ
उनके लिए	बवजह उसके जो	वो कमाते हैं	और उन्होंने कहा	हरगिज़ नहीं	छुएगी हमें	आग

اِلَّآ	اَيَّامًا	مَّعْدُوْدَةً ؕ	قُلْ	اَتَّخَذْتُمْ	عِنْدَ	اللّٰهِ	عَهْدًا
मगर	दिन	गिने-चुने	कह दीजिए	क्या ले रखा है तुमने	पास	अल्लाह के	कोई अहद

النصف

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى اللّٰهِ	تَقُوْلُوْنَ	اَمْ	عَهْدَهٗٓ	اللّٰهُ	يُّخْلِفَ	فَلَنْ
अल्लाह पर	तुम कहते हो	या	अपने अहद के	अल्लाह	ख़िलाफ़ करेगा	तो हरगिज़ नहीं

بِهٖ	وَّاَحَاطَتْ	سَيِّئَةً	كَسَبَ	مَنْ	بَلٰى	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿80﴾	مَا
उसको	और घेर लिया	कोई बुराई	कमाई	जिसने	हां (क्यों नहीं)	नहीं तुम इल्म रखते	जो

خٰلِدُوْنَ ﴿81﴾	فِيْهَا	هُمْ	النَّارِ ج	اَصْحٰبُ	فَاُولٰٓئِكَ	خَطِيْٓـَٔتُهٗ
हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	वो	आग के	साथी	तो यही लोग हैं	उसकी ख़ता ने

الْجَنَّةِ ج	اَصْحٰبُ	اُولٰٓئِكَ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ
जन्नत के	साथी	यही लोग हैं	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	और वो जो

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	مِيْثَاقَ	اَخَذْنَا	وَاِذْ	خٰلِدُوْنَ ﴿82﴾	فِيْهَا	هُمْ
बनी इस्राईल से	पुख़्ता अहद	लिया हमने	और जब	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	वो

ع 9 11 9

وَّذِي الْقُرْبٰى	اِحْسَانًا	وَبِالْوَالِدَيْنِ	اللّٰهَ	اِلَّا	لَا تَعْبُدُوْنَ
और रिश्तेदारों	एहसान करना	और साथ वालिदैन के	अल्लाह की	मगर	ना तुम इबादत करोगे

وَّاَقِيْمُوا	حُسْنًا	لِلنَّاسِ	وَقُوْلُوْا	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَالْيَتٰمٰى
और क़ायम करो	अच्छी (बात)	लोगों से	और कहो	और मिस्कीनों	और यतीमों

وَاَنْتُمْ	مِّنْكُمْ	قَلِيْلًا	اِلَّا	تَوَلَّيْتُمْ	ثُمَّ	الزَّكٰوةَ ط	وَاٰتُوا	الصَّلٰوةَ
और तुम	तुम में से	क़लील तादाद के	सिवाए	मुंह मोड़ लिया तुमने	फिर	ज़कात	और अदा करो	नमाज़

دِمَآءَكُمْ	لَا تَسْفِكُوْنَ	مِيْثَاقَكُمْ	اَخَذْنَا	وَاِذْ	مُّعْرِضُوْنَ ﴿83﴾
ख़ून अपने	ना तुम बहाओगे	पुख़्ता अहद तुमसे	लिया हमने	और जब	ऐराज़ करने वाले हो

وَاَنْتُمْ	اَقْرَرْتُمْ	ثُمَّ	مِّنْ دِيَارِكُمْ	اَنْفُسَكُمْ	تُخْرِجُوْنَ	وَلَا
और तुम	इक़रार किया तुमने	फिर	अपने घरों से	अपने नफ़्सों को	तुम निकालोगे	और ना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَشْهَدُوْنَ ﴿84﴾	ثُمَّ	اَنْتُمْ	هٰٓؤُلَآءِ	تَقْتُلُوْنَ	اَنْفُسَكُمْ	وَتُخْرِجُوْنَ
तुम गवाही देते हो	फिर	तुम	वो ही लोग हो	तुम क़त्ल कर डालते हो	अपने नफ़्सों को	और तुम निकाल देते हो

فَرِيْقًا	مِّنْكُمْ	مِّنْ دِيَارِهِمْ ز	تَظٰهَرُوْنَ	عَلَيْهِمْ	بِالْاِثْمِ
एक गिरोह को	अपनों में से	उनके घरों से	तुम चढ़ाई करते हो	उन पर	साथ गुनाह

وَالْعُدْوَانِ ط	وَاِنْ	يَّاْتُوْكُمْ	اُسٰرٰى	تُفٰدُوْهُمْ
और ज़्यादती के	और अगर	वो आऐं तुम्हारे पास	क़ैदी बन कर	तुम फ़िदया देकर छुड़ाते हो उन्हें

وَهُوَ	مُحَرَّمٌ	عَلَيْكُمْ	اِخْرَاجُهُمْ ط	اَفَتُؤْمِنُوْنَ	بِبَعْضٍ
हालांकि वो	हराम किया गया था	तुम पर	निकालना उनका	क्या फिर तुम ईमान लाते हो	बाज़ (हिस्से) पर

الْكِتٰبِ	وَتَكْفُرُوْنَ	بِبَعْضٍ ج	فَمَا	جَزَآءُ	مَنْ	يَّفْعَلُ	ذٰلِكَ
किताब के	और तुम कुफ़्र करते हो	साथ बाज़ के	तो नहीं	बदला	उसका जो	करता है	ये

مِنْكُمْ	اِلَّا	خِزْيٌ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ج	وَيَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
तुम में से	मगर	रुस्वाई	ज़िन्दगी में	दुनिया की	और दिन	क़यामत के

يُرَدُّوْنَ	اِلٰٓى	اَشَدِّ	الْعَذَابِ ط	وَمَا	اللّٰهُ	بِغَافِلٍ
वो लौटाए जाऐंगे	तरफ़	शदीद-तरीन	अज़ाब के	और नहीं	अल्लाह	ग़ाफ़िल

عَمَّا	تَعْمَلُوْنَ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اشْتَرَوُا	الْحَيٰوةَ
उससे जो	तुम अमल करते हो	यही वो लोग हैं	जिन्होंने	ख़रीद ली	ज़िंदगी

الدُّنْيَا	بِالْاٰخِرَةِ ز	فَلَا	يُخَفَّفُ	عَنْهُمُ	الْعَذَابُ	وَلَا
दुनिया की	बदले आख़िरत के	तो ना	हल्का किया जाएगा	उनसे	अज़ाब	और ना

هُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿86﴾ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْكِتٰبَ	وَقَفَّيْنَا
वो	वो मदद किए जाऐंगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	किताब	और पै दर पै भेजे हमने

ع 10 4 10

مِنۡۢ بَعۡدِهٖ	بِالرُّسُلِ	وَاٰتَيۡنَا	عِيۡسَى ابۡنَ مَرۡيَمَ	الۡبَيِّنٰتِ
बाद इस के	कई रसूल	और दीं हमने	ईसा इबने मरयम को	वाज़ेह निशानियां

وَاَيَّدۡنٰهُ	بِرُوۡحِ الۡقُدُسِ ؕ	اَفَكُلَّمَا	جَآءَكُمۡ	رَسُوۡلٌۢ	بِمَا
और क़ुव्वत दी हमने उसे	साथ रुहे क़ुदुस से	क्या फिर जब भी	आया तुम्हारे पास	कोई रसूल	साथ इसके जो

لَا تَهۡوٰٓى	اَنۡفُسُكُمُ	اسۡتَكۡبَرۡتُمۡ	فَفَرِيۡقًا	كَذَّبۡتُمۡ	وَفَرِيۡقًا
नहीं चाहते थे	नफ़्स तुम्हारे	तकब्बुर किया तुमने	तो एक गिरोह को	झुठलाया तुमने	और एक गिरोह को

تَقۡتُلُوۡنَ (87)	وَقَالُوۡا	قُلُوۡبُنَا	غُلۡفٌ	بَلۡ	لَّعَنَهُمُ	اللّٰهُ
तुम क़त्ल करते रहे	और उन्होंने कहा	दिल हमारे	गिलाफ़ हैं	(नहीं) बल्कि	लाअनत की उन पर	अल्लाह ने

بِكُفۡرِهِمۡ	فَقَلِيۡلًا مَّا	يُؤۡمِنُوۡنَ (88)	وَلَمَّا	جَآءَهُمۡ	كِتٰبٌ
बवजह उनके कुफ़्र के	पस कितना कम	वो ईमान लाते हैं	और जब	आ गई उनके पास	एक किताब

مِّنۡ عِنۡدِ	اللّٰهِ	مُصَدِّقٌ	لِّمَا	مَعَهُمۡ ۙ	وَكَانُوۡا	مِنۡ قَبۡلُ
पास से	अल्लाह के	तस्दीक़ करने वाली	उसकी जो	पास है उनके	हालांकि थे वो	इससे पहले

يَسۡتَفۡتِحُوۡنَ	عَلَى الَّذِيۡنَ	كَفَرُوۡا ۚۖ	فَلَمَّا	جَآءَهُمۡ	مَّا
वो फ़तह मांगते	उन पर जिन्होंने	कुफ़्र किया	तो जब	आ गया उनके पास	जो

عَرَفُوۡا	كَفَرُوۡا	بِهٖ	فَلَعۡنَةُ	اللّٰهِ	عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ (89)
उन्होंने पहचान लिया	उन्होंने कुफ़्र किया	साथ उसके	तो लाअनत है	अल्लाह की	काफ़िरों पर

بِئۡسَمَا	اشۡتَرَوۡا	بِهٖۤ	اَنۡفُسَهُمۡ	اَنۡ	يَّكۡفُرُوۡا	بِمَآ	اَنۡزَلَ
कितना बुरा है जो	बेच डाला उन्होंने	बदले उसके	अपने नफ़्सों को	कि	उन्होंने कुफ़्र किया	साथ उसके जो	नाज़िल किया

اللّٰهُ	بَغۡيًا	اَنۡ	يُّنَزِّلَ	اللّٰهُ	مِنۡ فَضۡلِهٖ	عَلٰى مَنۡ
अल्लाह ने	ज़िद की वजह से	कि	नाज़िल करता है	अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	जिस पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ۚ	فَبَآءُوْ	بِغَضَبٍ	عَلٰى غَضَبٍ ؕ	وَ لِلْكٰفِرِيْنَ
वो चाहता है	अपने बंदों में से	तो वो लौटे	साथ ग़ज़ब के	ग़ज़ब पर	और काफ़िरों के लिए

عَذَابٌ	مُّهِيْنٌ ﴿90﴾	وَ اِذَا	قِيْلَ	لَهُمْ	اٰمِنُوْا	بِمَآ
अज़ाब है	रुस्वाकुन/अहानत आमेज़	और जब	कहा जाता है	उन्हें	ईमान लाओ	उस पर जो

اَنْزَلَ	اللّٰهُ	قَالُوْا	نُؤْمِنُ	بِمَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْنَا	وَ يَكْفُرُوْنَ
नाज़िल किया	अल्लाह ने	वो कहते हैं	हम ईमान लाऐंगे	उस पर जो	नाज़िल किया गया	हम पर	और वो कुफ़्र करते हैं

بِمَا	وَرَآءَهٗ	وَهُوَ	الْحَقُّ	مُصَدِّقًا	لِّمَا	مَعَهُمْ	قُلْ
साथ उसके जो	इलावा है इसके	हालांकि वो ही	हक़ है	तस्दीक़ करने वाला है	इस की जो	पास है उनके	कह दीजिए

فَلِمَ	تَقْتُلُوْنَ	اَنْۢبِيَآءَ	اللّٰهِ	مِنْ قَبْلُ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿91﴾
तो क्यों	तुम क़त्ल करते रहे	नबियों को	अल्लाह के	इससे पहले	अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले

وَ لَقَدْ	جَآءَكُمْ	مُّوْسٰى	بِالْبَيِّنٰتِ	ثُمَّ	اتَّخَذْتُمُ	الْعِجْلَ
अलबत्ता तहक़ीक़	आया तुम्हारे पास	मूसा	साथ रोशन निशानियों के	फिर	बना लिया तुमने	बछड़े को (माबूद)

مِنْۢ بَعْدِهٖ	وَ اَنْتُمْ	ظٰلِمُوْنَ ﴿92﴾	وَ اِذْ	اَخَذْنَا	مِيْثَاقَكُمْ	وَ رَفَعْنَا
बाद इसके	और तुम	ज़ालिम हो	और जब	लिया हमने	पुख़्ता अहद तुमसे	और बुलंद किया हमने

فَوْقَكُمُ	الطُّوْرَ ؕ	خُذُوْا	مَآ	اٰتَيْنٰكُمْ	بِقُوَّةٍ	وَّاسْمَعُوْا ؕ
ऊपर तुम्हारे	तूर को	पकड़ो	जो	दिया हमने तुम्हें	साथ क़ुव्वत के	और सुनो

قَالُوْا	سَمِعْنَا	وَ عَصَيْنَا ۘ	وَ اُشْرِبُوْا	فِيْ قُلُوْبِهِمُ	الْعِجْلَ
उन्होंने कहा	सुना हमने	और नाफ़रमानी की हमने	और वो पिला दिए गए	अपने दिलों में	बछड़े की (मुहब्बत)

بِكُفْرِهِمْ ؕ	قُلْ	بِئْسَمَا	يَاْمُرُكُمْ	بِهٖٓ	اِيْمَانُكُمْ	اِنْ
बवजह अपने कुफ़्र के	कह दीजिए	कितना बुरा है जो	वो हुक्म देता है तुम्हें	जिसका	ईमान तुम्हारा	अगर

© ALL RIGHTS RESERVED INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ (93)	قُلْ	اِنْ	كَانَتْ	لَكُمُ	الدَّارُ	الْاٰخِرَةُ
हो तुम	मोमिन	कह दीजिए	अगर	है	तुम्हारे लिए	घर	आख़िरत का

عِنْدَ اللّٰهِ	خَالِصَةً	مِّنْ دُوْنِ	النَّاسِ	فَتَمَنَّوُا	الْمَوْتَ	اِنْ
पास अल्लाह के	ख़ास/ मख़सूस	इलावा	लोगों के	तो तुम तमन्ना करो	मौत की	अगर

كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ (94)	وَلَنْ	يَّتَمَنَّوْهُ	اَبَدًا	بِمَا	قَدَّمَتْ
हो तुम	सच्चे	और हरगिज़ नहीं	वो तमन्ना करेंगे उसकी	कभी भी	बवजह उसके जो	आगे भेजा

اَيْدِيْهِمْ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌۢ	بِالظّٰلِمِيْنَ (95)	وَلَتَجِدَنَّهُمْ	اَحْرَصَ
उनके हाथों ने	और अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	ज़ालिमों को	और अलबत्ता तुम ज़रूर पाओगे उन्हें	सबसे ज़्यादा हरीस

النَّاسِ	عَلٰى حَيٰوةٍ ۛ	وَمِنَ الَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْا ۛ	يَوَدُّ	اَحَدُهُمْ
लोगों में	ज़िंदगी पर	और उनसे भी जिन्होंने	शिर्क किया	चाहता है	हर एक उनका

لَوْ	يُعَمَّرُ	اَلْفَ	سَنَةٍ ۚ	وَمَا	هُوَ	بِمُزَحْزِحِهٖ	مِنَ الْعَذَابِ
काश	वो उम्र दिया जाए	हज़ार	साल	हालांकि नहीं	वो (उम्र का मिलना)	बचाने वाला उसे	अज़ाब से

اَنْ	يُّعَمَّرَ ؕ	وَاللّٰهُ	بَصِيْرٌۢ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ (96) ع	قُلْ
अगरचे	वो उम्र दिया जाए	और अल्लाह	ख़ूब देखने वाला है	उसे जो	वो अमल करते हैं	कह दीजिए

مَنْ	كَانَ	عَدُوًّا	لِّجِبْرِيْلَ	فَاِنَّهٗ	نَزَّلَهٗ	عَلٰى قَلْبِكَ
जो	है	दुश्मन	जिब्रील का	तो बेशक वो	उसने नाज़िल किया उसे	आपके दिल पर

بِاِذْنِ اللّٰهِ	مُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ	وَهُدًى	وَّبُشْرٰى
अल्लाह के इज़्न से	तस्दीक़ करने वाला है	उसकी जो	इससे पहले है	और हिदायत	और ख़ुशख़बरी है

لِلْمُؤْمِنِيْنَ (97)	مَنْ	كَانَ	عَدُوًّا	لِّلّٰهِ	وَمَلٰٓئِكَتِهٖ	وَرُسُلِهٖ
मोमिनों के लिए	जो कोई	है	दुश्मन	अल्लाह का	और उसके फ़रिश्तों का	और उसके रसूलों का

معانقة 2

ع 11 10 11

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَجِبْرِيْلَ	وَمِيْكٰلَ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	عَدُوٌّ	لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿98﴾
और जिब्रील का	और मीकाईल का	तो बेशक	अल्लाह	दुश्मन है	काफ़िरों का

وَلَقَدْ	اَنْزَلْنَآ	اِلَيْكَ	اٰيٰتٍۢ	بَيِّنٰتٍ ۚ	وَمَا	يَكْفُرُ
अलबत्ता तहक़ीक़	नाज़िल कीं हमने	तरफ़ आपके	आयात	वाज़ेह	और नहीं	कुफ़्र करते

بِهَآ	اِلَّا	الْفٰسِقُوْنَ ﴿99﴾	اَوَكُلَّمَا	عٰهَدُوْا	عَهْدًا	نَّبَذَهٗ
उनका	मगर	जो फ़ासिक़ हैं	क्या और जब कभी	उन्होंने अहद किया	कोई अहद	फेंक दिया उसे

وَلَمَّا	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿100﴾	اَكْثَرُهُمْ	بَلْ	مِّنْهُمْ	فَرِيْقٌ
और जब	नहीं वो ईमान लाते	अक्सर उनके	बल्कि	उनमें से	एक गिरोह ने

جَآءَهُمْ	رَسُوْلٌ	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ	مُصَدِّقٌ	لِّمَا	مَعَهُمْ
आ गया उनके पास	एक रसूल	अल्लाह के पास से	तस्दीक़ करने वाला	उसकी जो	पास है उनके

نَبَذَ	فَرِيْقٌ	مِّنَ الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ ۙ	كِتٰبَ اللّٰهِ
फेंक दिया	एक गिरोह ने	उन लोगो में से जो	दिए गए	किताब	अल्लाह की किताब को

وَرَآءَ	ظُهُوْرِهِمْ	كَاَنَّهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿101﴾ ۙ	وَاتَّبَعُوْا	مَا
पीछे	अपनी पुश्तों के	गोया कि वो	नहीं वो इल्म रखते	और उन्होंने पैरवी की	उसकी जो

تَتْلُوا	الشَّيٰطِيْنُ	عَلٰى مُلْكِ	سُلَيْمٰنَ ۚ	وَمَا	كَفَرَ
पढ़ते थे	शयातीन	बादशाहत पर(लगा कर)	सुलैमान की	और नहीं	कुफ़्र किया था

سُلَيْمٰنُ	وَلٰكِنَّ	الشَّيٰطِيْنَ	كَفَرُوْا	يُعَلِّمُوْنَ	النَّاسَ
सुलैमान ने	और लेकिन	शयातीन ने	कुफ़्र किया	वो सिखाते थे	लोगों को

السِّحْرَ	وَمَآ	اُنْزِلَ	عَلَى	الْمَلَكَيْنِ	بِبَابِلَ	هَارُوْتَ
जादू	और जो	नाज़िल किया गया था	ऊपर	दो फ़रिश्तों के	बाबिल में	हारूत

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَارُوْتَ ؕ	وَمَا	يُعَلِّمٰنِ	مِنْ اَحَدٍ	حَتّٰى	يَقُوْلَاۤ
और मारूत के	और नहीं	वो दोनो सिखाते थे	किसी एक को	यहां तक कि	वो दोनो कहते

اِنَّمَا	نَحْنُ	فِتْنَةٌ	فَلَا	تَكْفُرْ ؕ	فَيَتَعَلَّمُوْنَ	مِنْهُمَا
बेशक	हम तो	एक फ़ितना हैं	पस ना	तुम कुफ़्र करो	पस वो सीखते थे	उन दोनो से

مَا	يُفَرِّقُوْنَ	بِهٖ	بَيْنَ	الْمَرْءِ	وَزَوْجِهٖ	وَمَا
जो	वो जुदाई डालते थे	साथ उसके	दर्मियान	मर्द	और उसकी बीवी के	और नहीं थे

هُمْ	بِضَآرِّيْنَ	بِهٖ	مِنْ اَحَدٍ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ	وَيَتَعَلَّمُوْنَ
वो	ज़रर पहुंचाने वाले	साथ उसके	किसी एक को	मगर	अल्लाह के इज़्न से	और वो सीखते थे

مَا	يَضُرُّهُمْ	وَلَا	يَنْفَعُهُمْ ؕ	وَلَقَدْ	عَلِمُوْا	لَمَنِ
जो	नुक़्सान देता उन्हें	और ना	वो नफ़ा देता उन्हें	और अलबत्ता तहक़ीक़	वो जानते थे	अलबत्ता जिसने

اشْتَرٰىهُ	مَا	لَهٗ	فِى الْاٰخِرَةِ	مِنْ خَلَاقٍ ؕ	وَلَبِئْسَ
ख़रीदा उसे	नहीं है	उसके लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा	और अलबत्ता कितना बुरा है

مَا	شَرَوْا	بِهٖۤ	اَنْفُسَهُمْ ؕ	لَوْ	كَانُوْا	يَعْلَمُوْنَ ﴿102﴾
जो	उन्होंने बेच डाला	बदले उसके	अपनी जानों को	काश	होते वो	वो जानते

وَلَوْ	اَنَّهُمْ	اٰمَنُوْا	وَاتَّقَوْا	لَمَثُوْبَةٌ	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
और अगर	बेशक वो	ईमान लाते	और तक़वा इख़्तियार करते	अलबत्ता सवाब पाते	अल्लाह के पास से

خَيْرٌ	لَوْ	كَانُوْا	يَعْلَمُوْنَ ﴿103﴾ ع	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَقُوْلُوْا
बेहतर	काश	होते वो	वो जानते	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम कहो

ع 12 7 12

رَاعِنَا	وَقُوْلُوا	انْظُرْنَا	وَاسْمَعُوْا	لِلْكٰفِرِيْنَ	عَذَابٌ
राइना/रिआयत कीजिए हमारी	बल्कि कहो	उंज़ुरना /नज़र कीजिए हमारी तरफ़	और सुना करो	और काफ़िरों के लिए	अज़ाब है

اَلِيْمٌ ﴿104﴾	مَا	يَوَدُّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	وَلَا
दर्दनाक	नहीं	चाहते	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	अहले किताब में से	और ना

الْمُشْرِكِيْنَ	اَنْ	يُّنَزَّلَ	عَلَيْكُمْ	مِّنْ خَيْرٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ
मुशरिकीन	कि	नाज़िल की जाए	तुम पर	कोई ख़ैर	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और अल्लाह

يَخْتَصُّ	بِرَحْمَتِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ ﴿105﴾
वो ख़ास कर लेता है	साथ अपनी रहमत के	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	बहुत बड़े

مَا	نَنْسَخْ	مِنْ اٰيَةٍ	اَوْ	نُنْسِهَا	نَاْتِ	بِخَيْرٍ	مِّنْهَآ
जो भी	हम मंसूख़ करते हैं	कोई आयत	या	हम भुलवा देते हैं उसे	हम ले आते हैं	बेहतर	उससे

اَوْ	مِثْلِهَا ؕ	اَلَمْ	تَعْلَمْ	اَنَّ	اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ
या	उस जैसी	क्या नहीं	आपने जाना	बेशक	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के

قَدِيْرٌ ﴿106﴾	اَلَمْ	تَعْلَمْ	اَنَّ	اللّٰهَ	لَهٗ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ
बहुत क़ुदरत रखने वाला है	क्या नहीं	आपने जाना	बेशक	अल्लाह	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों की

وَالْاَرْضِ ؕ	وَمَا	لَكُمْ	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مِنْ وَّلِيٍّ	وَّلَا
और ज़मीन की	और नहीं	तुम्हारे लिए	सिवाय	अल्लाह के	कोई दोस्त	और ना

نَصِيْرٍ	اَمْ	تُرِيْدُوْنَ	اَنْ	تَسْـَٔلُوْا	رَسُوْلَكُمْ	كَمَا	سُئِلَ
कोई मददगार	क्या	तुम चाहते हो	कि	तुम सवाल करो	अपने रसूल से	जैसा कि	सवाल किए गए

مُوْسٰى	مِنْ قَبْلُ	وَمَنْ	يَّتَبَدَّلِ	الْكُفْرَ	بِالْاِيْمَانِ	فَقَدْ
मूसा	इस से क़ब्ल	और जो कोई	बदले में लेगा	कुफ़्र को	ईमान के	तो तहक़ीक़

ضَلَّ	سَوَآءَ	السَّبِيْلِ ﴿108﴾	وَدَّ	كَثِيْرٌ	مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
वो भटक गया	सीधे	रास्ते से	चाहते हैं	बहुत से	अहले किताब में से

لَوْ	يَرُدُّوْنَكُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	اِيْمَانِكُمْ	كُفَّارًا ۚ	حَسَدًا
काश	वो फेर दें तुम्हें	बाद	तुम्हारे ईमान के	काफ़िर बना कर	हसद की बिना पर

مِّنْ عِنْدِ	اَنْفُسِهِمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	مَا	تَبَيَّنَ	لَهُمُ	الْحَقُّ ۚ
पास से	अपने नफ़्सों के	बाद उसके	जो	वाज़ेह हो गया	उनके लिए	हक़

فَاعْفُوْا	وَاصْفَحُوْا	حَتّٰى	يَاْتِيَ	اللّٰهُ	بِاَمْرِهٖ ؕ	اِنَّ
पस माफ़ कर दो	और दरगुज़र करो	यहां तक कि	ले आए	अल्लाह	हुक्म अपना	बेशक

اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿109﴾	وَاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتُوا
अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ुदरत रखने वाला है	और क़ायम करो	नमाज़	और अदा करो

الزَّكٰوةَ	وَمَا	تُقَدِّمُوْا	لِاَنْفُسِكُمْ	مِّنْ خَيْرٍ	تَجِدُوْهُ
ज़कात	और जो भी	तुम आगे भेजोगे	अपने नफ़्सों के लिए	कोई ख़ैर	तुम पाओगे उसे

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ﴿110﴾	وَقَالُوْا
अल्लाह के पास	बेशक	अल्लाह	उसको जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	और उन्होंने कहा

لَنْ	يَّدْخُلَ	الْجَنَّةَ	اِلَّا	مَنْ	كَانَ	هُوْدًا	اَوْ
हरगिज़ नहीं	दाख़िल होगा	जन्नत में	मगर	वो जो	हो	यहूदी	या

نَصٰرٰى ؕ	تِلْكَ	اَمَانِيُّهُمْ ؕ	قُلْ	هَاتُوْا	بُرْهَانَكُمْ	اِنْ
नसारा	ये	तमन्नाऐं हैं उनकी	कह दीजिए	ले आओ	दलील अपनी	अगर

كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿111﴾	بَلٰى	مَنْ	اَسْلَمَ	وَجْهَهٗ	لِلّٰهِ	وَهُوَ
हो तुम	सच्चे	हां (क्यों नहीं)	जिसने	सुपुर्द कर दिया	चेहरा अपना	अल्लाह के लिए	और वो

مُحْسِنٌ	فَلَهٗۤ	اَجْرُهٗ	عِنْدَ	رَبِّهٖ ۪	وَلَا	خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا
मोहसिन हो	तो उसके लिए है	अज्र उसका	पास	उसके रब के	और ना	कोई खौफ़ होगा	उन पर	और ना

الثلثة

ع 13 9 13

هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿112﴾ ع	وَقَالَتِ	الْيَهُوْدُ	لَيْسَتِ	النَّصٰرٰى	عَلٰى شَيْءٍ ص
वो	वो ग़मगीन होंगे	और कहा	यहूद ने	नहीं हैं	नसारा	किसी चीज़ पर

وَّقَالَتِ	النَّصٰرٰى	لَيْسَتِ	الْيَهُوْدُ	عَلٰى شَيْءٍ	وَّهُمْ	يَتْلُوْنَ
और कहा	नसारा ने	नहीं हैं	यहूद	किसी चीज़ पर	हालांकि वो	वो तिलावत करते हैं

الْكِتٰبَ ط	كَذٰلِكَ	قَالَ	الَّذِيْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ	مِثْلَ	قَوْلِهِمْ ج
किताब की	इसी तरह	कहा	उन्होंने जो	नहीं इल्म रखते	मिस्ल/मानिंद	उनकी बात के

فَاللّٰهُ	يَحْكُمُ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	فِيْمَا	كَانُوْا	فِيْهِ
तो अल्लाह	फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	दिन	क़यामत के	उसमें जो	थे वो	जिसमें

يَخْتَلِفُوْنَ ﴿113﴾	وَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنْ	مَّنَعَ	مَسٰجِدَ	اللّٰهِ
वो इख़्तिलाफ़ करते	और कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	मना करे	मस्जिदों से	अल्लाह की

اَنْ	يُّذْكَرَ	فِيْهَا	اسْمُهٗ	وَسَعٰى	فِيْ خَرَابِهَا ط	اُولٰٓئِكَ
कि	ज़िक्र किया जाए	उनमें	नाम उसका	और वो कोशिश करे	उनकी ख़राबी/वीरानी की	यही लोग हैं

مَا	كَانَ	لَهُمْ	اَنْ	يَّدْخُلُوْهَآ	اِلَّا	خَآئِفِيْنَ ط	لَهُمْ	فِي الدُّنْيَا
नहीं	है	उनके लिए	कि	वो दाख़िल हों उनमें	मगर	डरते हुए	उनके लिए	दुनिया में

خِزْيٌ	وَّلَهُمْ	فِي الْاٰخِرَةِ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ	وَلِلّٰهِ	الْمَشْرِقُ
रुस्वाई है	और उनके लिए	आख़िरत में	अज़ाब है	बहुत बड़ा	और अल्लाह ही के लिए है	मशरिक़

وَالْمَغْرِبُ	فَاَيْنَمَا	تُوَلُّوْا	فَثَمَّ	وَجْهُ	اللّٰهِ	اِنَّ	اللّٰهَ
और मग़रिब	फिर जिस तरफ़	तुम मुंह करोगे	तो वहीं है	चेहरा	अल्लाह का	बेशक	अल्लाह

وَاسِعٌ	عَلِيْمٌ ﴿115﴾	وَقَالُوا	اتَّخَذَ	اللّٰهُ	وَلَدًا	سُبْحٰنَهٗ ط
वुसअत वाला	ख़ूब जानने वाला है	और उन्होंने कहा	बना ली	अल्लाह ने	कोई औलाद	पाक है वो

بَلْ	لَّهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	كُلٌّ	لَّهٗ	قٰنِتُوْنَ ﴿116﴾
बल्कि	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में	और ज़मीन में है	सब	उसी के	फ़रमांबरदार हैं

بَدِيْعُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَاِذَا	قَضٰٓى	اَمْرًا	فَاِنَّمَا
ईजाद करने वाला है	आसमानों	और ज़मीन का	और जब	वो फ़ैसला करता है	किसी काम का	तो बेशक

يَقُوْلُ	لَهٗ	كُنْ	فَيَكُوْنُ ﴿117﴾	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ
वो कहता है	उसके लिए	हो जा	तो वो हो जाता है	और कहा	उन्होंने जो	नहीं इल्म रखते

لَوْلَا	يُكَلِّمُنَا	اللّٰهُ	اَوْ	تَاْتِيْنَآ	اٰيَةٌ	كَذٰلِكَ	قَالَ
क्यों नहीं	कलाम करता हमसे	अल्लाह	या	आती हमारे पास	कोई निशानी	इसी तरह	कहा था

الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّثْلَ	قَوْلِهِمْ ؕ	تَشَابَهَتْ	قُلُوْبُهُمْ ؕ	قَدْ
उन्होंने जो	उनसे पहले थे	मिस्ल/मानिंद	उनकी बात के	मुशाबा हो गए	दिल उनके	तहक़ीक़

بَيَّنَّا	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يُّوْقِنُوْنَ ﴿118﴾	اِنَّآ	اَرْسَلْنٰكَ	بِالْحَقِّ
वाज़ेह कर दीं हमने	आयात	उन लोगों के लिए	जो यक़ीन रखते हैं	बेशक हमने	भेजा हमने आपको	साथ हक़ के

بَشِيْرًا	وَّنَذِيْرًا ۙ	وَّلَا تُسْـَٔلُ	عَنْ اَصْحٰبِ	الْجَحِيْمِ ﴿119﴾
ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला (बना कर)	और ना आप से सवाल किया जाएगा	साथियों के बारे में	जहन्नम के

وَلَنْ	تَرْضٰى	عَنْكَ	الْيَهُوْدُ	وَلَا	النَّصٰرٰى	حَتّٰى	تَتَّبِعَ
और हरगिज़ नहीं	राज़ी होंगे	आपसे	यहूद	और ना	नसारा	यहां तक कि	आप पैरवी करें

مِلَّتَهُمْ	قُلْ	اِنَّ	هُدَى	اللّٰهِ	هُوَ	الْهُدٰى	وَلَئِنِ
उनके तरीक़े की	कह दीजिए	बेशक	हिदायत	अल्लाह की	वो ही	हिदायत है	और अलबत्ता अगर

اتَّبَعْتَ	اَهْوَآءَهُمْ	بَعْدَ	الَّذِيْ	جَآءَكَ	مِنَ الْعِلْمِ ۙ	مَا
पैरवी की आपने	उनकी ख़्वाहिशात की	बाद इसके	जो	आ गया आपके पास	इल्म में से	नहीं

© ALHIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف منزل

لَكَ	مِنَ اللّٰهِ	مِنْ وَّلِيٍّ	وَّلَا	نَصِيْرٍ ﴿120﴾	اَلَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ
आपके लिए	अल्लाह से (बचाने वाला)	कोई हिमायती	और ना	कोई मददगार	वो लोग जो	दी हमने उन्हें

الْكِتٰبَ	يَتْلُوْنَهٗ	حَقَّ	تِلَاوَتِهٖ	اُولٰٓئِكَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِهٖ ؕ
किताब	वो तिलावत करते हैं उसकी	(जैसा) हक़ है	उसकी तिलावत का	यही लोग हैं	जो ईमान लाते हैं	उस पर

ع 14 9 14

وَمَنْ	يَّكْفُرْ	بِهٖ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿121﴾	يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
और जो कोई	कुफ़्र करेगा	उसका	तो यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	ऐ बनी इस्राईल

اذْكُرُوْا	نِعْمَتِيَ	الَّتِيْٓ	اَنْعَمْتُ	عَلَيْكُمْ	وَاَنِّيْ	فَضَّلْتُكُمْ
याद करो	मेरी नेअमत को	वो जो	इनआम की मैंने	तुम पर	और बेशक मैं	फ़ज़ीलत दी थी मैंने तुम्हें

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿122﴾	وَاتَّقُوْا	يَوْمًا	لَّا تَجْزِيْ	نَفْسٌ	عَنْ نَّفْسٍ
तमाम जहानों पर	और डरो	उस दिन से	नही काम आएगा	कोई नफ़्स	किसी नफ़्स के

شَيْـًٔا	وَّلَا	يُقْبَلُ	مِنْهَا	عَدْلٌ	وَّلَا	تَنْفَعُهَا	شَفَاعَةٌ
कुछ भी	और ना	क़ुबूल किया जाएगा	उससे	कोई बदला	और ना	नफ़ा देगी उसे	कोई सिफ़ारिश

وَّلَا	هُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿123﴾	وَاِذِ	ابْتَلٰٓى	اِبْرٰهٖمَ	رَبُّهٗ	بِكَلِمٰتٍ
और ना	वो	वो मदद किए जाऐंगे	और जब	आज़माया	इब्राहीम को	उसके रब ने	चंद कलिमात से

فَاَتَمَّهُنَّ ؕ	قَالَ	اِنِّيْ	جَاعِلُكَ	لِلنَّاسِ	اِمَامًا ؕ	قَالَ
तो उसने पूरा कर दिया उन्हें	फ़रमाया	बेशक मैं	बनाने वाला हूं तुझे	लोगों के लिए	इमाम	कहा

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ	قَالَ	لَا يَنَالُ	عَهْدِى	الظّٰلِمِيْنَ ﴿124﴾	وَاِذْ
और मेरी औलाद में से	फ़रमाया	नही पहुंचेगा	अहद मेरा	ज़ालिमों को	और जब

جَعَلْنَا	الْبَيْتَ	مَثَابَةً	لِّلنَّاسِ	وَاَمْنًا ؕ	وَاتَّخِذُوْا
बनाया हमने	बैतुल्लाह को	लौटने की जगह/मरकज़	लोगों के लिए	और अमन की जगह	और बना लो

مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ	مُصَلًّى ؕ	وَعَهِدْنَآ	اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ	وَاِسْمٰعِيْلَ
मक़ामे इब्राहीम को	जाए नमाज़	और अहद लिया हमने	इब्राहीम से	और इस्माईल से

اَنْ	طَهِّرَا	بَيْتِىَ	لِلطَّآئِفِيْنَ	وَالْعٰكِفِيْنَ	وَالرُّكَّعِ
कि	तुम दोनों पाक करो	मेरे घर को	वास्ते तवाफ़ करने वालों के	और एतकाफ़ करने वालों	और रुकूअ करने वालों

السُّجُوْدِ ﴿125﴾	وَاِذْ	قَالَ	اِبْرٰهٖمُ	رَبِّ	اجْعَلْ	هٰذَا	بَلَدًا
सज्दा करने वालों के	और जब	कहा	इब्राहीम ने	ऐ मेरे रब	बना दे	इस	शहर

اٰمِنًا	وَّارْزُقْ	اَهْلَهٗ	مِنَ الثَّمَرٰتِ	مَنْ	اٰمَنَ	مِنْهُمْ
अमन वाला	और रिज़्क़ दे	इसके रहने वालों को	फलों में से	जो कोई	ईमान लाए	उनमें से

بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	قَالَ	وَمَنْ	كَفَرَ	فَاُمَتِّعُهٗ	قَلِيْلًا
अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	फ़रमाया	और जिसने	कुफ़्र किया	तो मै फ़ायदा दूंगा उसे	थोड़ा सा

ثُمَّ	اَضْطَرُّهٗٓ	اِلٰى	عَذَابِ	النَّارِ ؕ	وَبِئْسَ	الْمَصِيْرُ ﴿126﴾
फिर	मैं मजबूर कर दुंगा उसे	तरफ़	अज़ाब	आग के	और कितनी बुरी है	लौटने की जगह

وَاِذْ	يَرْفَعُ	اِبْرٰهٖمُ	الْقَوَاعِدَ	مِنَ الْبَيْتِ	وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ	رَبَّنَا
और जब	बुलंद कर रहे थे	इब्राहीम	बुनियादें	बैतुल्लाह की	और इस्माईल	ऐ हमारे रब

تَقَبَّلْ	مِنَّا	اِنَّكَ	اَنْتَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿127﴾	رَبَّنَا
तू क़ुबूल फ़रमा	हमसे	बेशक तू	तू ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	ऐ हमारे रब

وَاجْعَلْنَا	مُسْلِمَيْنِ	لَكَ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ	اُمَّةً	مُّسْلِمَةً
और बना हमें	फ़रमांबरदार	अपने लिए	और हमारी औलाद में से	एक उम्मत	फ़रमांबरदार

لَّكَ ۠	وَاَرِنَا	مَنَاسِكَنَا	وَتُبْ	عَلَيْنَا ۚ	اِنَّكَ	اَنْتَ
अपने लिए	और दिखा हमें	हमारी इबादत के तरीक़े	और महरबान हो	हम पर	बेशक तू	तू ही है

التَّوَّابُ	الرَّحِيْمُ ﴿128﴾	رَبَّنَا	وَابْعَثْ	فِيْهِمْ	رَسُوْلًا
बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	निहायत रहम करने वाला	ऐ हमारे रब	और मबऊस फ़रमा	इनमें	एक रसूल को

مِّنْهُمْ	يَتْلُوْا	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتِكَ	وَيُعَلِّمُهُمُ	الْكِتٰبَ
इन्हीं में से	वो तिलावत करे	उन पर	आयात तेरी	और वो तालीम दे उन्हें	किताब

ع 15 8 15

وَالْحِكْمَةَ	وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ	اِنَّكَ	اَنْتَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ﴿129﴾ ع
और हिक्मत की	और वो तज़्किया करे उनका	बेशक तू	तू ही है	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला

وَمَنْ	يَّرْغَبُ	عَنْ مِّلَّةِ	اِبْرٰهٖمَ	اِلَّا	مَنْ	سَفِهَ
और कौन है	जो मुंह मोड़े	तरीक़े से	इब्राहीम के	मगर	वो जिसने	बेवक़ूफ़ बनाया

نَفْسَهٗ	وَلَقَدِ	اصْطَفَيْنٰهُ	فِي الدُّنْيَا	وَاِنَّهٗ	فِي الْاٰخِرَةِ
अपने नफ़्स को	और अलबत्ता तहक़ीक़	चुन लिया था हमने उसे	दुनिया में	और बेशक वो	आख़िरत में

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿130﴾	اِذْ	قَالَ	لَهٗ	رَبُّهٗٓ	اَسْلِمْ ۙ	قَالَ
अलबत्ता सालेह लोगों में से है	जब	कहा	उसको	उसके रब ने	फ़रमांबरदार हो जा	उसने कहा

اَسْلَمْتُ	لِرَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿131﴾	وَوَصّٰى	بِهَآ	اِبْرٰهٖمُ	بَنِيْهِ
मैं फ़रमांबरदार हो गया	रब के लिए	तमाम जहानों के	और वसीयत की	उसकी	इब्राहीम ने	अपने बेटों को

وَيَعْقُوْبُ ؕ	يٰبَنِيَّ	اِنَّ	اللّٰهَ	اصْطَفٰى	لَكُمُ	الدِّيْنَ
और याक़ूब ने	ऐ मेरे बेटो	बेशक	अल्लाह ने	चुन लिया	तुम्हारे लिए	दीन को

فَلَا تَمُوْتُنَّ	اِلَّا	وَاَنْتُمْ	مُّسْلِمُوْنَ ﴿132﴾ ؕ	اَمْ	كُنْتُمْ	شُهَدَآءَ
पस तुम हरगिज़ ना मरना	मगर	इस हाल में कि तुम	मुसलमान हो	क्या	थे तुम	मौजूद

اِذْ	حَضَرَ	يَعْقُوْبَ	الْمَوْتُ ۙ	اِذْ	قَالَ	لِبَنِيْهِ	مَا	تَعْبُدُوْنَ
जब	आई	याक़ूब को	मौत	जब	उसने कहा	अपने बेटों से	किसकी	तुम इबादत करोगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِبْرٰهٖمَ	اٰبَآئِكَ	وَاِلٰهَ	اِلٰهَكَ	نَعْبُدُ	قَالُوْا	مِنْۢ بَعْدِیْ ؕ
इब्राहीम	तेरे आबा ओ अजदाद के	और इलाह की	तेरे इलाह की	हम इबादत करेंगे	उन्होंने कहा	मेरे बाद

مُسْلِمُوْنَ (133)	لَهٗ	وَّنَحْنُ	وَّاحِدًا ۚۖ	اِلٰهًا	وَاِسْحٰقَ	وَاِسْمٰعِيْلَ
फ़रमांबरदार हैं	उसी के लिए	और हम	एक ही की	इलाह की	और इस्हाक़ के	और इस्माईल

وَلَكُمْ	كَسَبَتْ	مَا	لَهَا	خَلَتْ	قَدْ	اُمَّةٌ	تِلْكَ
और तुम्हारे लिए है	उसने कमाया	जो	उसके लिए है	वो गुज़र गई	तहक़ीक़	एक उम्मत थी	ये

يَعْمَلُوْنَ (134)	كَانُوْا	عَمَّا	تُسْئَلُوْنَ	وَلَا	كَسَبْتُمْ ۚ	مَّا
वो अमल करते	थे वो	उसके बारे में जो	तुम सवाल किए जाओगे	और ना	कमाया तुमने	जो

بَلْ	قُلْ	تَهْتَدُوْا	نَصٰرٰى	اَوْ	هُوْدًا	كُوْنُوْا	وَقَالُوْا
बल्कि	कह दीजिए	तुम हिदायत पा लोगे	नस्रानी	या	यहूदी	हो जाओ	और उन्होंने कहा

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (135)	كَانَ	وَمَا	حَنِيْفًا ؕ	اِبْرٰهٖمَ	مِلَّةَ
मुशरिकीन में से	था वो	और नहीं	जो यकसू था	इब्राहीम की	मिल्लत

اُنْزِلَ	وَمَآ	اِلَيْنَا	اُنْزِلَ	وَمَآ	بِاللّٰهِ	اٰمَنَّا	قُوْلُوْٓا
नाज़िल किया गया	और जो	तरफ़ हमारे	नाज़िल किया गया	और (उस पर) जो	अल्लाह पर	ईमान लाए हम	कहो तुम

وَالْاَسْبَاطِ	وَيَعْقُوْبَ	وَاِسْحٰقَ	وَاِسْمٰعِيْلَ	اِبْرٰهٖمَ	اِلٰٓى
और औलादे याक़ूब के	और याक़ूब	और इस्हाक़	और इस्माईल	इब्राहीम के	तरफ़

مِنْ رَّبِّهِمْ	النَّبِيُّوْنَ	اُوْتِيَ	وَمَآ	وَعِيْسٰى	مُوْسٰى	اُوْتِيَ	وَمَآ
अपने रब की तरफ़ से	तमाम अम्बिया	दिए गए	और जो	और ईसा	मूसा	दिए गए	और जो

مُسْلِمُوْنَ (136)	لَهٗ	وَنَحْنُ	مِّنْهُمْ	اَحَدٍ	بَيْنَ	لَا نُفَرِّقُ
फ़रमांबरदार हैं	उसी के लिए	और हम	उनमें से	किसी एक के	दर्मियान	नहीं हम फ़र्क़ करते

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاِنْ	اهْتَدَوْا ج	فَقَدِ	بِهٖ	اٰمَنْتُمْ	بِمِثْلِ مَآ	اٰمَنُوْا	فَاِنْ
और अगर	वो हिदायत पा गए	पस तहक़ीक़	साथ उसके	ईमान लाए तुम	जिस तरह	वो ईमान ले आएं	फिर अगर

وَهُوَ	اللّٰهُ ج	فَسَيَكْفِيْكَهُمُ	فِيْ شِقَاقٍ ج	هُمْ	فَاِنَّمَا	تَوَلَّوْا
और वो	अल्लाह	पस अनक़रीब काफ़ी होगा आपको उनसे	इख़्तिलाफ़ में हैं	वो	तो बेशक	वो मुंह फेर लें

مِنَ اللّٰهِ	اَحْسَنُ	وَمَنْ	اللّٰهِ ج	صِبْغَةَ	الْعَلِيْمُ ط (137)	السَّمِيْعُ
अल्लाह से	ज़्यादा अच्छा है	और कौन	अल्लाह का	रंग	ख़ूब जानने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है

اَتُحَآجُّوْنَنَا	قُلْ	عٰبِدُوْنَ (138)	لَهٗ	وَّنَحْنُ	صِبْغَةً
क्या तुम झगड़ा करते हो हमसे	कह दीजिए	इबादत करने वाले हैं	उसी की	और हम	रंग में

وَلَكُمْ	اَعْمَالُنَا	وَلَنَآ	وَرَبُّكُمْ ج	رَبُّنَا	وَهُوَ	فِي اللّٰهِ
और तुम्हारे लिए हैं	आमाल हमारे	और हमारे लिए हैं	और रब है तुम्हारा	रब है हमारा	हालांकि वो	अल्लाह के बारे में

تَقُوْلُوْنَ	اَمْ	مُخْلِصُوْنَ (139)	لَهٗ	وَنَحْنُ	اَعْمَالُكُمْ ج
तुम कहते हो	या	मुख़लिस हैं	उसी के लिए	और हम	आमाल तुम्हारे

وَالْاَسْبَاطَ	وَيَعْقُوْبَ	وَاِسْحٰقَ	وَاِسْمٰعِيْلَ	اِبْرٰهٖمَ	اِنَّ
और औलादे याक़ूब	और याक़ूब	और इस्हाक़	और इस्माईल	इब्राहीम	बेशक

اللّٰهُ ط	اَمِ	اَعْلَمُ	ءَاَنْتُمْ	قُلْ	نَصٰرٰى ط	اَوْ	هُوْدًا	كَانُوْا
अल्लाह	या	ज़्यादा जानते हो	क्या तुम	कह दीजिए	नसरानी	या	यहूदी	थे वो

مِنَ اللّٰهِ ط	عِنْدَهٗ	شَهَادَةً	كَتَمَ	مِمَّنْ	اَظْلَمُ	وَمَنْ
अल्लाह की तरफ़ से	जो पास है उसके	गवाही को	छुपाए	उससे जो	बड़ा ज़ालिम है	और कौन

اُمَّةٌ	تِلْكَ	تَعْمَلُوْنَ (140)	عَمَّا	بِغَافِلٍ	اللّٰهُ	وَمَا
एक उम्मत थी	ये	तुम अमल करते हो	उससे जो	ग़ाफ़िल	अल्लाह	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَدْ	خَلَتْ ۚ	لَهَا	مَا	كَسَبَتْ	وَلَكُمْ	مَّا	كَسَبْتُمْ ۚ
तहक़ीक	वो गुज़र गई	उसके लिए है	जो	उसने कमाया	और तुम्हारे लिए है	जो	कमाया तुमने

وَلَا	تُسْـَٔلُوْنَ	عَمَّا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿141﴾ ع
और ना	तुम सवाल किए जाओगे	उसके बारे में जो	थे वो	वो अमल करते

ع 16 12 16

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION